Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

तपोभूमि

(वैदिक परिवारों का लोकप्रिय मासिक)

वर्ष २७] मार्च'१९८० [अङ्क ३

अनुक्रमणिका

मन स्वार्थी न होता (कविता)	३	जय ज्ञान-जयविवेक	३३
ज्ञान और ऐश्वर्य की प्राप्ति	४	श्रम और लक्ष्मी (लघु कथा)	३४
गुण धारण की क्षमता	५	**मातृ मन्दिर**	
वैदिक त्रैतवाद	७	बच्चे और अनुशासन	३५
दयानन्द और योग	११	यदि आप माँ बनने वाली हैं!	३८
स्वधर्म पालन से सिद्धि	१५	**आर्यकुमार स्तम्भ**	
मानसिक शक्तियों का विकास	१७	स्वदेशभूषा का अभिमान	४१
समाज-सेवी के आवश्यक गुण	१९	**स्वास्थ्य सुधा**	
वीराङ्गना देवसेना	२२	लाख टके की दवा लौंग	४३
वर्त्तमान में महर्षि का महत्व	२६	हृदय रोग से बचाव	४४
भाषण सुनने की सजा	३०	महर्षि और यौन शिक्षा	४७
खानदानी आर्यसमाजी	३१	भारतीय आर्यों की उत्पत्ति	४८

ध्येय वाक्य—व्यक्ति-व्यक्ति के आर्यकरण और परिवारों के वैदिकीकरण से ही आर्यसमाजोदय होगा, आर्यसमाजोदय से ही भारतोदय होगा और भारतोदय से ही विश्वोदय होकर देव दयानन्द के दिव्य स्वप्न साकार होंगे ।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

सिंहस्थ मेला उज्जैन

वेद प्रचार शिविर एवं वेद पारायण महायज्ञ

३१ मार्च से ३० अप्रेल तक

इस अवसर पर श्री पं० वीरसेनजी के संयोजन में यज्ञ चिकित्सा शिविर तथा श्री महात्मा प्रेमभिक्षुजी के आचार्यत्व में दि० १७ से २१ अप्रैल तक वैदिक परिवार साधना शिविर लगेगा। योगासन एवं प्राणायाम शिविर के संयोजक श्री गणपतिजी वर्मा हैं। आर्यावर्त्त प्रदर्शिनी, दयानन्द दिव्य दर्शन प्रदर्शिनी, वैदिक धर्म प्रदर्शिनी, पुस्तक विक्रय केन्द्र आदि इस मेले के अन्य आकर्षण हैं। अनेक विद्वान् पहुँच रहे हैं।

स्वर्ण जयन्ती समारोह एवं वैदिक जीवन शिविर

आ० स० बिरला लाइन्स, दिल्ली में २७ अप्रैल से ४ मई तक आयोजित होरहा है। यह शिविर अनेक दृष्टियों से अत्यन्त महत्वपूर्ण होगा। स्वामी दीक्षानन्दजी, स्वा० सत्यपतिजी, महात्मा प्रेमभिक्षुजी, श्री इ० आर्यनरेशजी तथा अन्य अनेक विद्वान् भाग ले रहे हैं।

डिक्लेरेशन

१—प्रकाशन का स्थान—सत्य प्रकाशन, वृन्दावन मार्ग, मथुरा.

२—प्रकाशन अवधि—मासिक

३—मुद्रक—ईश्वरीप्रसाद 'प्रेम'
राष्ट्रीयता—भारतीय.
पता—सत्यप्रकाशन, मथुरा.

४—प्रकाशक—ईश्वरी प्रसाद 'प्रेम'
राष्ट्रीयता—भारतीय
पता—सत्य प्रकाशन, मथुरा.

५—सम्पादक—ईश्वरी प्रसाद 'प्रेम'
राष्ट्रीयता—भारतीय.
पता—सत्य प्रकाशन, मथुरा.

६—सत्वाधिकारी—सत्य प्रकाशन समिति, वृन्दावन मार्ग, मथुरा.

मैं ईश्वरी प्रसाद 'प्रेम' यह घोषित करता हूँ कि ऊपर दिये गये सब विवरण जहाँ तक मैं जानता हूँ और मेरा विश्वास है सत्य हैं। २८ फरवरी'८०।

प्रकाशक के हस्ताक्षर
[ईश्वरीप्रसाद 'प्रेम'

**शुद्ध मनुस्मृति अङ्क म
या जून तक निकलेगा
सन'८० तक का शु
अविलम्ब भेजें। —व्य**

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

तपोभूमि

(वैदिक परिवारों का लोकप्रिय मासिक)

वर्ष २६] पौष २०३६ : दिसम्बर' ७९ [अङ्क ११

* मन स्वार्थी न होता *

–लाखनसिंह भदौरिया 'सौमित्र'

मन स्वार्थी न होता, क्यों द्वार-द्वार रोता ?
तन स्वार्थी न होता, क्यों प्यार-प्यार रोता ?
पाया हुआ न लुटता, आया हुआ न खोता,
पाये हुए का तू जो, उपकार बीज बोता,
मालिक अपार धन का, तू बार-बार होता !
मन स्वार्थी न होता, क्यों द्वार-द्वार रोता ?

शुचि साधना में तेरी, कुछ हीनता न होती,
पूजा में कामना की, यदि दीनता न होती,
तेरी पुकार सुनकर, ईश्वर उदार होता ?
मन स्वार्थी न होता, क्यों द्वार-द्वार रोता ?

अस्तित्व–बोध अपना, करती अगर जवानी,
बनती भविष्य गाथा, तेरी अमर कहानी !
अमरत्व-पुत्र होकर, क्यों जार-जार रोता !
मन स्वार्थी न होता, क्यों द्वार-द्वार रोता ?

इतने गुलाब खिलते, टहनी न टूट जाती,
पौधों की पत्ती-पत्ती, हँसती हुई हँसाती,
उर-वीन ही न बजती, हर तार-तार रोता ?
मन स्वार्थी न होता क्यों द्वार-द्वार रोता ?

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

ज्ञान और ऐश्वर्य की प्राप्ति

आ तू न इन्द्र कौशिक मन्दसान. सुतं पिव ।
नव्यमायुः प्र सू तिर कृधी सहस्रसामृषिम् ॥

ऋ० १।१०।११

हे परमेश्वर, हे आनन्द स्वरूप, हे परम शिक्षक ! तू ज्ञान स्वरूप है, तू मेरी प्रेम भाव युक्त प्रार्थना सुन, उसे स्वीकार कर और मेरे अन्दर नवजीवन का विकास कर। मुझ ज्ञान के जिज्ञासु के लिये अपना दिव्य ज्ञान प्रकट कर, मुझ ऐश्वर्य के इच्छुक के लिए ऐश्वर्य प्राप्ति में सहायक हो, मुझे समर्थ कर। असमर्थ व्यक्ति जीवन संघर्ष में घबरा जाता है। न तो वह ज्ञान की ही प्राप्ति करता है और न ऐश्वर्य ही पाता है, वह केवल अपनी असमर्थता में अपने भाग्य को कोसा करता है। असमर्थ व्यक्ति अपने व्यक्तित्व का विकास नहीं कर सकता, उसकी असमर्थता उसे हीन बना देती है और उसकी हीनता उसे दीन और पराधीन कर देती है।

असमर्थता एक लाञ्छन है, एक अभिशाप है। जो मनुष्य अपनी अमर चैतन्य सत्ता को भूल जाता है वही परिस्थिति का दास हो जाता है, वह अपने ही अन्दर विराजमान और निरंतर के साथी अपने भगवान् को भी भूल जाता है और पग पग पर ठोकरें खाता हुआ विषाद और अवसाद में डूबा रहता है।

अपने पश्चात्ताप तथा गुरुजनों की, दिव्य जनों की सहायता से जब उसका मन जगाया जाता है और उसे उसका अमरत्व समझाया जाता है तब वह अपने आप में पुनः विश्वास करने लगता है और उसके नवजीवन का पुनः आरम्भ होता है, मनुष्य जब अपने में जीवन अनुभव करता है तो वह अपनी आत्मज्योति को समझने लगता है।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

अपने आत्मा को जानने से उसे अपने अन्दर स्थित भगवान् का भी बोध होता है, और नम्र भाव से पुनः आत्मोन्नति की प्रगति के लिए यत्नशील होता है। यत्नशील मनुष्य सहायता चाहता है आदित्य प्रभा की और हृदय बिहारी भगवान् की। और उसे सहायता मिलती है। उसमें पुनः दिव्यगुण धारण करने की क्षमता जाग्रत होती है और वह दिव्यगुण धारण करके दिव्यात्मा हो जाता है, धर्मात्मा हो जाता है। धर्मात्मा व्यक्ति में ही दिव्य प्रेम के भाव उदय होते हैं। अपने दिव्य प्रेम के भावों को वह प्रार्थना के रूप में भगवान के आगे प्रकट करता है। भगवान् प्रार्थना सुनता है और उसमें नवजीवन का संचार होने लगता है। इस प्रकार मनुष्य का उद्धार हुआ करता है।

स्वाध्याय और सत्संग से दिव्य प्रेम भाव पुष्ट होते हैं और मनुष्य दिव्यगुण धारण करता हुआ स्व-संशोधन किया करता है और भगवान् की कृपा से वही व्यक्ति जो विषाद और अवसाद में फंसा था अब सर्वसमर्थ भगवान् से सामर्थ्य पाता है और कृतार्थ होता है। *

तेरे गुण धारण की क्षमता

नि त्वा नक्ष्य विश्पते द्युमन्तं देव धीमहि।
सुवीरमग्न आहुत ॥ ऋ० ७। १५। ७

हे सारी प्रजाओं के पालक हे शरण योग्य, हे परम पूज्य, हे प्रकाशस्वरूप, हे सर्वनियन्ता ! हम तेरा ध्यान करते हैं, हम तेरे गुण धारण करते हैं।

हे परम उपास्य देव ! हम तेरे उपासक होना चाहते हैं, तेरे निकटवर्ती होना चाहते हैं। हम अपना जीवन तेरे अनुकूल बनाते हैं जिससे तू हमें स्वीकार कर ले और हमारी कामना पूरा हो।

दिव्यगुण धारण करना परम साधना है। इस साधना में अवश्य ही आदित्य जनों, दिव्य जनों की प्रेरणा मिलती है, जो साधक का जीवन पथ आलोकित करती है और वह सुपथ पर चलता हुआ समर्थ

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

हो जाता है। समर्थ मनुष्य दिव्यगुण धारण करता है और दिव्यगुण से उसका सामर्थ्य और अधिक बढ़ता है। यह साधना है परम ऐश्वर्यवान् के परम दिव्यगुण को धारण करने की, जिसमें दयामय प्रेममय भगवान् पुरुषार्थी साधक की अवश्य सहायता करता है।

भगवान् परम पूज्य है परम आदरणीय है, वह केवल इसलिये पूजा के योग्य नहीं है कि वह सर्वोत्तम सामर्थ्यवान् है। इसका कारण यह है कि वह अशरण शरण, सबको अपना आश्रय देता है, सबको अपनी परम विस्तृत शरण में लेता है, वह सारी प्रजाओं का रक्षक पालक पोषक है और वह परम दयामय है। वह भूले हुए व्यक्ति को पुनः चेतन करता है और अपनी करुणा से उसका उद्धार करता है। जो भगवान् का उपासक होना चाहता है उसमें निष्कपट-स्नेह होना चाहिये और वह सरल प्रेम उसके जीवन व्यवहार में चरितार्थ होना चाहिए। यही है दिव्यगुण धारण, जो परम साधन है जिसमें भगवान् की सहायता की अपेक्षा है। भगवान् की दया, उसकी करुणा असीम है। हम भी सबका यथा शक्ति उपकार करते रहें यही उसके व्रत में व्रती होना है। इस व्रत से भगवान् प्रसन्न होते हैं और व्रती का उद्धार करते हैं। व्रती की उन्नति में सत्य के साक्षात्कार तक भगवान् सहायता करते हैं और वह समय आ जाता है जब उसमें आत्म ज्योति प्रदीप्त होती है और उसकी अपनी ज्योति में ही परमज्योति का परम दिव्य प्रकाश हुआ करता है।

जिसमें आत्मविश्वास है, जिसमें दृढ़ निश्चय है वह व्यक्ति इस साधना में सफल होता है और उसमें श्रद्धा-विश्वास का प्रकाश रहता है, सत्य और प्रेम के समन्वय में ही जीवन पवित्र और समर्थ होता है, सत्य चेतन और आनन्द ही परमदिव्य गुण हैं। इन्हें धारण करने में अन्य दिव्यगुण धैर्य, पराक्रम, बल-वीर्य, तेज-ओज, सत् ज्ञान, स्थिरता, दृढ़ता आदि सभी सत्य के अनुष्ठान की गहराई पर निर्भर हैं।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

वैदिक त्रैतवाद —पं० ओंकार मिश्र 'प्रणव' शास्त्री

संसार क्या है ? इसको किसने जाना था ? इत्यादि प्रश्नों का उत्तर मध्यकालीन विचारकों ने जब-जब, जो-जो दिया है उस सबको एकत्रित कर यदि विश्लेषण किया जाये तो वर्तमान काल में उसके तीन प्रमुख भेद हो सकते हैं।

प्रथम यह कि संसार में केवल एक ही ईश्वर की सत्ता है। न जीव है, न प्रकृति। इस विचारधारा को मानने वाले प्रमुखतः नवीन वेदान्ती हैं जो यह मानते है कि एक ब्रह्म से ही समस्त सृष्टि का सृजन हुआ है।

द्वितीय यह कि संसार में केवल जीवात्मा का ही अस्तित्व है। ईश्वर तथा प्रकृति की कोई सत्ता नहीं है। जीवात्मा श्रेष्ठ कर्म करते-करते उस श्रेणी को प्राप्त कर लेता है जिसको लोग ईश्वर, अवतार या तीर्थङ्कर मानने लग जाते है। इस विचार धारा को मानने वाले अधिकांश बौद्ध वं जैन मत के अनुयायी हैं।

तृतीय यह कि संसार में केवल प्रकृति की सत्ता है—न ईश्वर है न जीव। प्रकृति के परमाणुओं में लगातार परिवर्तन होते होते एक चेतन अमीवा की उत्पत्ति हो जाती है तथा विकासक्रम के आधार पर संसार के समस्त प्राणी उत्पन्न हो जाते हैं। इस विचार धारा को मानने वाले अर्विन के अनुयायी चार्वाक अथवा नवीन वैज्ञानिक कहे जा सकते हैं।

इसके अतिरिक्त ईश्वर जीव प्रकृति, इन तीनों पदार्थों का एक कालाविच्छेदन अनादिकाल से मानने वाली वैदिक विचारधारा है जिसकी पुनः संस्थापना इस युग में महर्षि दयानन्द ने की तथा जिसका प्रचार तथा प्रसार ऋषि का उत्तराधिकारी संस्थान आर्यसमाज कर रहा है। अब क्रमानुसार संक्षेपतया उल्लिखित विचार धाराओं पर आप ध्यानाकृष्ट कीजिए—

प्रथम—संसार में केवल ईश्वर की ही सत्ता है। इस अनुक्रम में नवीन वेदान्त की मान्यता पर भी विचार कीजिये। नवीन वेदान्त

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

के अनुसार "एकोऽहं बहुस्याम" आधार पर ब्रह्म ने बहुत होने की इच्छा की तो समस्त संसार इस प्रकार ब्रह्म से उद्भूत हो गया जिस प्रकार ऊण नाभि मकड़ी अपने ही शरीर से जाला बना देती है और उसी में वास करती है।

इस विषय में थोड़ा दार्शनिक दृष्टिकोण से ध्यान दीजिये। दर्शनशास्त्र का एक वैज्ञानिक सिद्धान्त है—

'कारण गुण पूर्वक : कार्य गुणो द्रष्टः'

अर्थात् प्रत्येक कार्य अपने निमित्त कारण के गुणों से परिपूर्ण होता है। जिस प्रकार मृत्तिका से निर्मित घर में मिट्टी के गुण विद्यमान रहते हैं इसी प्रकार यदि संसार को ब्रह्म से उत्पन्न माना जावे तो संसार ब्रह्म के गुणों से ओत-प्रोत होना चाहिये। जैसे कि ब्रह्म अखण्ड तथा अच्छेद्य है संसार भी अखण्ड तथा अच्छेद्य होना चाहिये, तथा ब्रह्म अदृश्य है तो संसार भी अदृश्य होना चाहिये।

इस विषय में जो मकड़ी का निदर्शन दिया जाता है वह भी तर्क तुला पर ठीक नहीं बैठता क्योंकि नवीन वेदान्त जिस मकड़ी को एक पदार्थ मान रहे हैं वह दार्शनिक दृष्टिकोण से दो पदार्थ है। अर्थात् एक तो दृश्य जड़ शरीर तथा द्वितीय अदृश्य जीवात्मा। प्रभु के सृष्टि रचना के अद्भुत कौशल के धरातल पर ही चेतन जीवात्मा जड़ शरीर से तार बनाता रहता है। यदि इस जीवात्मा के पास शरीर नहीं होता, कभी भी वह तार नहीं बना सकता था। जैसे कि कितना ही चतुर व बुद्धिमान वैज्ञानिक कुम्भकार अथवा स्वर्णकार हो वह मिट्टी तथा स्वर्ण के अभाव में कभी घर अथवा भूषण नहीं बना सकता। इसी प्रकार ब्रह्म भी बिना प्रकृति उपादान कारण के जगत् की रचना नहीं कर सकता।

द्वितीय विचारधारा यह है कि केवल जीवात्मा की ही सत्ता है। उस समय प्रश्न उपस्थित होता है कि यदि केवल जीवात्मा ही है तो यह विशाल सृष्टि, पृथ्वी, पर्वत, सूर्य चन्द्र, लोक लोकान्तर, सागर वन, वृक्ष, लता, विद्युत्, अग्नि, वायु, जल आदि तथा मनुष्य पशु

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

पक्षी, कृमि कीट आदि के सूक्ष्मातिसूक्ष्म शरीरों की रचना किसने की। क्योंकि संचित ज्ञान सामर्थ्य एवं क्रियावान जीवात्मा ऐसी अद्भुत रचना कदापि कथमपि नहीं कर सकता। इस विषय में बौद्ध, जैन सम्प्रदाय इस प्रश्न का उत्तर यह देता है कि जगत् की रचना कभी नहीं हुई यह अनादि काल से ही इसी प्रकार वर्तमान है और अनन्त काल तक इसी प्रकार विद्यमान रहेगा। जब जगत् की रचना ही नहीं मानते तो रचयिता को मानने का कोई प्रश्न ही नहीं उठता।

इस भ्रान्त धारणा पर आचार्य यास्क ने निर्मित्त पदार्थों की प्रामाणिकता में छः सिद्धान्त प्रस्तुत किये हैं।

'षड भाव विकारा भवन्ति, जायते, अस्ति,
विपरिणमते, वर्द्धते अपक्षीयते विनश्यति।'

अर्थात् संसार में जो पदार्थ बनाये गये हैं वे इन छः वैज्ञानिक प्रक्रियाओं के घेरे में रहते हैं।

(१) जैसे कोई पदार्थ उत्पन्न होता है या बनाया जाता है। (२) उसी को "है" ऐसा कहा जाता है। (३) अस्तित्वावच्छिन्न पदार्थों में परिवर्तन होता रहता है। (४) परिवर्तन की दिशा में ही वह बढ़ता है। (५) बढ़ा हुआ पदार्थ क्रमशः ह्रास की ओर जाता है। (६) ह्रास में जाने वाला पदार्थ यथासमय विनष्ट हो जाता है।

इस प्रकार संसार का कोई 'अणोरणीयान् महतो महीयान्' पदार्थ (भौतिक) ऊपर लिखित छः वैज्ञानिक प्रक्रियाओं की अवधि से बाहर नहीं जा सकता। इसलिये दृश्यमान जगत् के प्रत्येक पदार्थ का निर्माण अवश्य हुआ है। निर्मित पदार्थों के लिये निर्माता की सत्ता प्रत्येक दशा में माननी पड़ेगी। केवल जीवात्मा की सत्ता मानने वालों को परमात्मा का अस्तित्व अवश्य ही मानना पड़ेगा।

तृतीय विचार धारा यह है कि केवल प्रकृति की सत्ता है। ईश्वर तथा जीवात्मा का कोई अस्तित्व नही है। ऐसी दशा में संसार एक विविध प्रकार के निर्मित पदार्थों की रचना होगी तथा चेतनता की उत्पत्ति का प्रश्न अनायास ही उपस्थित होगा। प्रकृति पोषक

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

सभी मत मतान्तरों की धारणा है कि यद्यपि पृथिवी, जल, तेज, वायु, आकाश ये सभी तत्व जड़ हैं किन्तु पारस्परिक संयोग से ये चेतनता अपने अन्दर उसी प्रकार उत्पन्न कर लेते हैं जिस प्रकार दधि गोमय के संयोग से विच्छू कृमि की उत्पत्ति हो जाती हैं।

यद्यपि उल्लिखित उदाहरण केवल जन-श्रुति मात्र ही हैं परीक्षण सम्भवतः किसी ने ही किया हो। 'दुर्जन तोषण न्यायेन' इस जनश्रुति को यदि सत्य ही मान लिया जावे तो इस प्रसंग में भी यह अपरिहार्य आशंका उपस्थित होती है कि प्रथम तो दधि और गोमय यह दोनों पदार्थ स्वयं उत्पन्न नहीं हैं। यह दोनों पदार्थ चेतन गौ से उत्पन्न विकार है। इन में भी दधि तो चेतन मनुष्य की एक विशेष प्रक्रिया के आधार पर दुग्ध का ही परिवर्तित रूप है।

द्वितीय दधि और गोमय दोनों जड़ पदार्थों में वृश्चिक उत्पत्ति की इच्छा ज्ञान तथा क्रिया का सर्वथा अभाव है। ऐसी स्थिति में बिना चेतन के सम्पर्क से जड़ पदार्थ सर्वथा गति हीन एवं प्रयोजन रहित ही सिद्ध होगा। संसार में प्राकृतिक पदार्थों को छोड़ कर जितना भी निर्माण दृष्टिगोचर होता है उस सब में चेतन जीवात्मा के अद्भुत ज्ञान, कौशल तथा क्रिया का ही चमत्कार दिखाई पड़ता है। अतः प्रकृतिवादी विचारधारा को चेतन सत्ता को मानने के लिए विवश होना पड़ेगा।

इस सब ऊहापोह के धरातल में वेदानुमोदित ऋषि प्रतिपादित एवं आर्यसमाज द्वारा प्रचारित त्रैतवाद का ही सिद्धान्त युक्तियुक्त तथा तर्क-संगत सिद्ध होता है।

---

* ज्ञान का सही प्रयोग ही बुद्धि मत्ता है। --सर्जन

* युवकों के दिल तक पहुँचने के लिए दिमाग चाहिए, प्रौढ़ों के दिमाग तक पहुँचने के लिए दिल चाहिए।-त्रेटन

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

सिद्धान्त-चर्चा—

ऋषि दयानन्द और योग विभूतियाँ

—श्री जगदेवसिंह सिद्धान्ती

जिन महानुभावों ने ऋषि दयानन्द द्वारा रचित वेद भाष्यों से लेकर व्यवहारभानु तक सब ग्रन्थों का सूक्ष्म दृष्टि से पारायण किया है, वे जानते हैं कि वह स्वयं सिद्धयोगी थे और उन्होंने सब मनुष्यों को योगाभ्यास द्वारा ईश्वर आदि तत्वों को साक्षात् करने के लिये अनेक स्थलों पर प्रेरणा दी है। इस छोटे से लेख में उनके द्वारा रचित केवल यजुर्वेद भाष्य से ही ग्यारह उद्धरण दिये जाते हैं।

(१) भावार्थ—सर्वैर्मनुष्यैर्य सर्वे वेदाः प्रशंसन्ति योगिन उपासते यं प्राप्य मुक्ता आनन्दं भुञ्जते स एव उपास्य इष्टो देवो मन्तव्यः।

—यजु० अ० १७, मन्त्र ६१

भाषार्थ—सब मनुष्यों को चाहिये कि सब वेद जिसकी प्रशंसा करते, योगी जन जिसकी उपासना करते और मुक्त, पुरुष जिसको प्राप्त होकर आनन्द भोगते हैं उसी को उपासना के योग्य इष्टदेव मानें।

(२) भावार्थ—आप्तैर्विद्वद्भिरुपास्यते यश्च सुखस्वरूपो मङ्गलप्रदः परमेश्वरोऽस्ति तं समाधियोगेन मनुष्या उपासीरन्।

—यजु० अ० १७ मन्त्र ६२

भाषार्थ—जो उत्तम शास्त्र जानने वाले विद्वानों से उपासना किया जाता तथा जो सुख-स्वरूप और मङ्गल कार्यों का देने वाला परमेश्वर है उसकी समाधि योग से मनुष्य उपासना करें।"

(३) भावार्थ— यदा मनुष्यः स्वात्मना सह परमात्मानं युङ्क्ते तदा ऽणिमादयः सिद्धयः प्रादुर्भवति ततो ऽव्याहतगत्याभीष्टानि स्थानानि गन्तुं शक्नोति नान्यथा।" —यजु० अ० १७ मन्त्र ६७

भाषार्थ—जब मनुष्य अपने आत्मा के साथ परमात्मा के योग को प्राप्त होता है तब अणिमा आदि सिद्धि उत्पन्न होती है उसके पीछे

* मूल मन्त्रों के लिये यजुर्वेद संहिता देखें।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

कहीं से न रुकने वाली गति से अभीष्ट स्थानों को जा सकता है, अन्यथा नहीं ।

(४) भावार्थ-शोभना विद्वांसो योगिनो जितेन्द्रिया भूत्वा संयमेन स्वेष्टं परमात्मान प्राप्यानन्दं विस्तारयन्ति ।-यजु. अ. १७, मन्त्र ६८

भाषार्थ—अच्छे विद्वान् योगीजन जितेन्द्रिय होकर नियम से अपने को अभीष्ट परमात्मा को पाकर आनन्द का विस्तार करते हैं ।

(५) भावार्थ—यो योगी तप-आदि-साधनैर्योगबलं प्राप्यासंख्य-प्राणिशरीराणि प्रविश्यानेक नेत्रादिभिरङ्गैर्दर्शनादिकार्याणि कर्त्तुं शक्नोति । अनेकेषां पदार्थानां धनानां च स्वामी भवति सोऽस्माभिर-वश्यं परिचरणीयः । —यजु० अ० १७, मन्त्र ७१

आशा है, सभी पाठक उपर्युक्त मूल मन्त्रों और उन पर ऋषि के पदार्थ भाष्य का भी मनन करेंगे और इसके पश्चात् ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका का उपासना प्रकरण, सत्यार्थ प्रकाश का ७ म और ९ म समुल्लास तथा योगदर्शन का व्यासभाष्य ध्यान से पढ़ें । इसे अध्ययन से निश्चय ही ऋषि दयानन्द के योगज-सामर्थ्य का प्रत्यक्ष ही सकेगा । ✱ —सम्पादक

भाषार्थ—जो योगी पुरुष, तप, स्वाध्याय और ईश्वर प्राणि-धान आदि योग के साधनों से धारणा, ध्यान, समाधि रूप संयम, के बल को प्राप्त हो और अनेक प्राणियों के शरीरों में प्रवेश करके अनेक शिर नेत्र आदि अङ्गों से देखने आदि कार्यों को कर सकता है । अनेक पदार्थों वा धनों का स्वामी भी हो सकता है उसका हम लोगों को अवश्य सेवन करना चाहिये ।

(६) भावार्थ-ये साधूनि कर्माणि कृत्वा कृतयोगाभ्यासस्य विदुषः सङ्गप्रीतिभ्यां परस्परं संवादं कुर्वन्ति ते सर्वाधिष्ठानमीश्वरं प्राप्य सिद्धा जयन्ते । —यजु० अ० १७, मन्त्र ७३

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

भाषार्थ—जो अच्छे कामों को करके योगाभ्यास करने वाले विद्वान् के संग और प्रीति से परस्पर संवाद करते हैं वे सबके अधिष्ठान परमात्मा को प्राप्त होकर सिद्ध होते हैं।

(७) भावार्थ-इह यस्य योगसंस्कारयुक्तस्य जीवस्य पवित्रापचितं जन्म जायते स संस्कारबलान् योगजिज्ञासुरेव भवति ये तं सेवन्ते ते ऽपि योगजिज्ञासवः सर्वं एतेऽग्निरिन्धनानीव सर्वामशुद्धिं योगेन दहन्ति।

—यजु० अ० १७, मन्त्र ७५

भाषार्थ—इस संसार में योग के संस्कार से युक्त जिस जीव का पवित्र भाव से जन्म होता है वह संस्कार की प्रबलता से योग ही के जानने की चाहना करने वाला होता है और उसका जो सेवन करते हैं वे भी योग की चाहना करने वाले होते हैं उक्त सब योगी जन जैसे अग्नि ईंधन को जलाता है वैसे समस्त दुःख अशुद्ध भाव को योग से जलाते हैं।

(८) भावार्थ—"ये शमादियुक्ताः संयता योगमभ्यस्यन्त्यृद्धिसिद्धिसहिताश्च भवन्ति तेऽन्यानपि समृद्धयितुं शक्नुवन्ति।"

—यजु० अ० १८, मंत्र ११

भाषार्थ—जो शमादि नियमों से युक्त संयम को प्राप्त योग का अभ्यास करते और ऋद्धि-सिद्धि को प्राप्त हुए हैं वे औरों को भी अच्छे प्रकार ऋद्धि-सिद्धि दे सकते हैं।

(९) भावार्थ—ये युक्ताहारविहारा वेदानधीत्य योगमभ्यस्यऽविद्यादिक्लेशान्निवृत्य योगसिद्धीः प्राप्य तदभिमानमपि विहाय कैवल्यमाप्नुवन्ति ते ब्रह्मानन्दं भुञ्जते।' —यजु० अ० ५९, मन्त्र ७४

भाषार्थ—जो युक्त आहार-विहार करने हारे वेदों को पढ़, योगाभ्यास कर अविद्यादि क्लेशों को छुड़ा, योग की सिद्धियों को प्राप्त हो और उनके अभिमान को भी छोड़ के कैवल्य को प्राप्त होते हैं वे ब्रह्मानन्द का भोग करते हैं।

भावार्थ—१० 'यथा निवृत्तिमार्गे परमयोगी योगबलेन सर्वाः

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

सिद्धीः प्राप्नोति तथैवान्यैर्गृहस्थैरपि प्रवृत्तिमार्गे सर्वेश्वर्यं प्राप्तव्यमिति।' --यजु० अ० १८, मंत्र ६१

भाषार्थ--जैसे निवृत्ति मार्ग में परम योगी योग बल से सब सिद्धियों को प्राप्त होता है वैसे अन्य गृहस्थ लोगों को भी प्रवृत्ति मार्ग में सब ऐश्वर्य को प्राप्त होना चाहिये।'

भावार्थ --११ 'येऽत्रजगति विद्वत्तमा योगाधिराजा यथातथ्येन परमेश्वरं जानन्ति ते निखिलजनशोधकाः सन्तो जीवन्मुक्तिदशायाँ परोपकारमाचरन्तो विदेहमुक्तिदशायां न सूर्यलोकं न च पृथिव्यां नियतं वसन्ति किन्तु ब्रह्मणि स्थित्वाऽव्याहतगत्या सर्वत्राभिविहरन्ति।' --यजु० अ० १७, मंत्र १४

भाषार्थ--जो इस जगत् में उत्तम विद्वान् योगीराज यथार्थता से परमेश्वर को जानते हैं वे सम्पूर्ण प्राणियों को शुद्ध करने और जीवन्मुक्तिदशा में परोपकार करते हुये विदेह-मुक्ति अवस्था में न सूर्यलोक और न पृथिवी पर नियम से बसते हैं किन्तु ईश्वर में स्थिर हो के अव्याहत गति से सर्वत्र विचरा करते हैं।

निन्दा और आलोचना --श्री राजेन्द्रप्रसाद जैन

निन्दा सबसे बड़ा पाप है। यह धीरे २ एक व्यसन बन जाता हैं। फिर हम निन्दा की खोज में लगते हैं। जहाँ भी निन्दा होती दिखायी पड़ती है, वहाँ हमारा जी लगता है। आगे चलकर जिनकी निन्दा हम करना नहीं चाहते, उनकी भी निन्दा करने लगते हैं। इस प्रकार हमारे सम्बन्ध सभी से बिगड़ने लगते हैं। शान्ति प्राप्त नहीं होती, जी ऊबने लगता है। बात आगे बढ़ती है तो परिवार के सदस्य एक दूसरे की निन्दा करने लगते हैं। सास-बहू, पिता-पुत्र, भाई-भाई में कलह होने लगता है। परिणामस्वरूप सभी दुःख-दारिद्रय वहाँ एक-एक कर पहुँचने लगते हैं।

अतः यदि आप अपने परिवार में होने वाले कलह से दुःखी हैं तो प्रयोग करके देखिये। एक वर्ष के लिये व्रत लें कि आप अपने मुख से किसी की निन्दा नहीं करेंगे। इसे आप 'अनिन्दाव्रत' कह सकते हैं। जहाँ तक हो दूसरे की प्रशंसा करें।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

स्वधर्म पालन से सिद्धि की प्राप्ति

प्राइमरी कक्षाओं को पढ़ाने वाला कोई शिक्षक, घर के बाल-बच्चों और पति की सेवा करने वाली गृहणी, देश की रक्षा के लिए लडने वाला कोई सिपाही, किसी मिल या खेत में काम करने वाला कोई मजदूर, शाक-भाजी बेचने वाला कोई व्यापारी अपने कर्म को तुच्छ समझ ले, तो यह भारी भूल होगी। कोई भी कर्म मामूली या तुच्छ नहीं, समाज के लिए उपयोगी सभी काम महत्वपूर्ण हैं।

स्वधर्म पवित्र वस्तु है

एक घड़ी में छोटे-बड़े अनेक पुर्जे होते हैं। इन सब के सहयोग से घड़ी ठीक २ समय बताने में समर्थ होती है। इन पुर्जों में से किसी को तुच्छ कैसे कहा जा सकता है? एक छोटा सा पेच भी उतना ही महत्वपूर्ण, जितना डायल या घड़ी की सुइयाँ। शरीर के किस अङ्ग को तुच्छ कहा जा सकता है? आँख का कार्य महत्वपूर्ण है, कान का नहीं, ऐसा विचार भ्रमपूर्ण ही है। शरीर के सौन्दर्य, स्वास्थ्य और शक्ति के लिए सभी अवयवों का सङ्गठन आवश्यक है।

फिर भी कलम लेकर वेदान्त का भाष्य लिखने वाले एक दार्शनिक तथा फावड़ा लेकर मिट्टी खोदने वाले एक मजदूर का काम समान कोटि का है, ऐसा हम नहीं कह रहे। प्रधानमन्त्री और दफ्तर के चपरासी का काम एक कोटि का नहीं माना जा सकता। मिल-मालिक और एक मजदूर का मूल्याङ्कन एक जैसा कैसे हो सकता है? ज्ञान और विद्या की अनवरत उपासना करने वाले ही समाज के मार्ग दर्शक हो सकते हैं। बने-बनाये मार्ग पर चलने के लिए, किसी विशेष प्रज्ञा और प्रतिभा की आवश्यकता नहीं। इसलिए काम की कोटि में छोटे-बड़े का भेद तो अवश्य रहेगा। साम्यवाद की विचारधारा या किसी प्रकार की चिकनी-चुपड़ी बातों से यह भेद मिटाया जा सकता है, हम नहीं मानते।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

स्वधर्म में भेद, प्रकृति अनुसार

कर्म में छोटे-बड़े का भेद अवश्य है। हर एक व्यक्ति सेनापति या साहित्यकार नहीं हो सकता, यह सोलह आना सत्य है। विशेष प्रकार के संस्कार, शिक्षण, ज्ञान, बुद्धि, अनुभव, श्रद्धा, धृति, कर्तृत्व मनुष्य की एक विशेष प्रकार की प्रकृति का निर्माण होता है। इस प्रकृति के कारण किसी की प्रवृत्ति विद्या तथा बुद्धि सम्बन्धी कार्यों में हो सकती है, किसी की युद्ध आदि साहस के कार्यों में, किसी की कला-कौशल तथा कारीगरी आदि में। प्रकृति के अनुरूप प्रवृत्ति का नाम ही स्वधर्म है। प्रकृति के अनुसार प्रवृत्ति (स्वधर्म) में भेद तो होगा ही। परन्तु इसका तात्पर्य यह नहीं कि कोई स्वधर्म हीन या अवगणना पात्र है। समाज के लिए उपयोगी प्रत्येक कर्म या व्यवसाय, दक्षता या उत्साह से करने में व्यक्ति का गौरव है और समाज का कल्याण है।

स्वधर्म पालन से सिद्धि

स्वे-स्वे कर्मण्यभिरतः संसिद्धिं लभते नरः। गीता १८-४५॥

अपने २ स्वभावसिद्ध व्यवसाय (चाहे वह व्यवसाय ब्राह्मण का हो या शूद्र का हो) को, योग्य ढङ्ग से करता हुआ मनुष्य, जीवन की परम सिद्धि प्राप्त करता है।

जो कर्म जीवन को धन्य बनाने एवं परम सिद्धि प्राप्त करने में समर्थ है, उसे हीन मान लेना हर किसी के लिए विघातक है।

कर्म की श्रेष्ठता व कनिष्ठता वस्तुतः कर्म पर नहीं, परन्तु वह कर्म जिस बुद्धि या भावना से किया जाता है उस पर आश्रित है। बुद्धि की इस शुद्धता-अशुद्धता के कारण ही ब्राह्मण का कर्म करते हुए भी, एक व्यक्ति पामर हो सकता है और दूसरा कोई भी शूद्र समाज में प्रतिष्ठित हो सकता है।

इस प्रकार शुद्ध और सात्विक भावना से किया स्वधर्म (चाहे वह फावड़ा चलाना हो, गो-चारण हो या शाकभाजी बेचना हो) योग युक्ति व कला को पदवी प्राप्त करता है। ★

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

मानसिक शक्तियों का विकास आवश्यक

--डा० रामचरण महेन्द्र

मनुष्य शरीर दुर्बल हो तो प्रायः उससे उतनी हानि नहीं होती जितनी मस्तिष्क कमजोर होने से होती है। कई महापुरुष जीवन भर शरीर से निर्बल रहे, किन्तु उनके पास सशक्त और पूर्ण विकसित मस्तिष्क थे। उन्होंने बुद्धि, तर्क, ज्ञान, अध्यात्म-विज्ञान और साहित्य के अध्ययन द्वारा अपने मस्तिष्क को अधिकतम विकसित किया था। उनमें नये विचारों को सोच सकने, भावी जीवन की संभावनायें, कल्पना करने और मौलिक चिन्तन करने की क्षमता थी। इसी कारण उनके दुबले पतले शरीर भी संसार को नये सिरे से ढालने में समर्थ हुए। जिनसे स्पष्ट है कि शरीर के भोजन की अपेक्षा मस्तिष्क का भोजन अधिक जरूरी है।

साधारणतः शरीर तो प्रकृति के नियमों के अनुसार बढ़ता ही रहता है। पशु, पक्षी, कीट, पतंगे, वृक्ष आदि की तरह मनुष्य का शरीर भी अपने आप बढ़ता है। अजगर, सांप, भैंस, गैंडा, बैल, सुअर बड़ी-बड़ी मछलियां अनापसनाप शरीरों को बढ़ाते हैं। उनका एक मात्र कार्य, खाना, पीना और सन्तान ही होता है। उन्हें पता तक नहीं होता कि उनके पास मस्तिष्क जैसा विकसित किया जाने वाला अति अद्भुत और विलक्षण यन्त्र भी मौजूद है। मस्तिष्क विकास से ही मनुष्य सब जीवों का सिरमौर कहलाता है।

वर्तमान अवस्था से ऊँचे उठकर समुन्नत विवेकशील और शक्तिशाली बनकर संसार पर राज्य करने की भावना सब मनुष्यों में होती है। इस उद्देश्य की पूर्ति तभी सम्भव है। जब आदमी के पास विकसित मस्तिष्क हो। मानसिक प्रगति का सच्चा स्वरूप हम तभी समझ पाते हैं जब हमारे मस्तिष्क में अच्छा-बुरा, हानि-लाभ, उन्नति-अवनति का स्वरूप समझने की शक्ति और विवेक हो।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

इस संसार में दिमागी निर्बल प्राणियों के लिए कोई स्थान नहीं। प्रकृति के सारे आघात कमजोरों पर ही होते हैं, संसार के सघर्ष में योग्य, साहसी और विचारशील व्यक्ति ही ठहर सकते हैं। जीवन के लिए विचार शक्ति की अनिवार्यता आवश्यक है।

जो व्यक्ति किन्हीं कारणों से कमजोर शरीर वाले हैं, वे भी अपने सशक्त मन के कारण खूब मानसिक और साहित्यिक कार्य कर सकते हैं। मनुष्य जीवन में शरीर की अपेक्षा मस्तिष्क और आत्मा का बहुत अधिक महत्व है। उन्नत मस्तिष्क ही उसे समस्त पशुओं का शासक बनाए हुए है। अपने विकसित ज्ञान से ही वह समग्र पृथ्वी पर निर्बाध शासन करता है। उसमें सोचने, भावी जीवन की कल्पना करने, अपना ज्ञान बढ़ाने, अध्यापन, लेखन और भाषण देने की अद्भुत् और आश्चर्य चकित करने वाली चमत्कारिक शक्तियाँ है। वही अच्छा सोच सकता है। उसके मस्तिष्क में नित नये २ उपयोगी और विकासोन्मुख विचार आते रहते हैं। केवल वही विचारों की दुनियाँ में रह सकते हैं। शेष भव्य विचारों, मधुर कल्पनाओं, सत्-संकल्पों और सरल चिन्तन का आनन्द नहीं उठा सकते। अच्छे मस्तिष्क के आनन्द केवल आदमी के लिए ही बने हैं। अपने मस्तिष्क के सही विकास द्वारा ही यह सब सम्भव हो सकता है।

विचार एक सूक्ष्म तत्व हैं। बिजली की तेज तरंग की भाँति विचार तेजी से हमारे दिमाग से आते हैं। कभी-कभी बाह्य जीवन के हर्ष, विशाद, उत्साह, करुणा, क्रोध, ईर्ष्या, भय, स्नेह, दर्प, महत्वाकांक्षा आदि, भावनाएं नए-नए मौलिक विचारों को जन्म देती हैं। वह ऐसे भाव अनुभवों से परिपूर्ण आर उत्तेजित रहता है। जो शब्दों के माध्यम से कविता की भाषा में ही कागज पर उतारे जाते हैं। मनुष्य अपनी पुरानी स्मृतियों को पुनः कल्पना-क्षितिज पर ला सकता है और अनुभवों को लिपिबद्ध कर सकता है। आदमी अपने अनुभव को लिख लेता है उनमें पुस्तक बना लेता है। असंख्य पुस्तकें

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

सच्चे समाज-सेवी के लिए आवश्यक गुण

नोट की कीमत कागज की लम्बाई-चौड़ाई के अनुसार नहीं, परन्तु उस पर लगी मोहर के अनुसार, १०, १०० या १००० रुपये होती है। ठीक इसी प्रकार किसी सेवाकार्य की कीमत उसके विस्तार बाह्याडम्बर अथवा परिणाम आदि के हिसाब से नहीं, परन्तु समाज-सेवा की आन्तरिक भावना की निर्मलता-अनिर्मलता के अनुसार ही आंकी जाती हैं।

भावना की शुद्धता—कल्पना कीजिए, नदी में डूबते हुए किसी व्यक्ति को बचाने के लिए, दो आदमी जल में कूद पड़ते हैं। दोनों के सम्मिलित प्रयत्न से, डूबता व्यक्ति किनारे लग जाता है और उसकी जान बच जाती है। दोनों व्यक्तियों का, यह जान बचाने का कर्म तो बिल्कुल एक जैसा है, परन्तु इनमें से एक ने डूबते की जान बचाई है, इस भावना (intention) से कि डूबते को बचाना मनुष्य का धर्म है, और दूसरे ने इस भावना से कि उसका दुश्मन ऐसी आसानी से मर न जाय, परन्तु उसे जेल भिजवा कर तिल-तिल करके उसकी जान ली जा सके। इस भावना-भेद से एक का कर्म श्रेष्ठ सेवा है, दूसरे का द्रोह या प्रतिशोध। भाव यह कि भावना की शुद्धता-अशुद्धता के अनुसार ही, सेवा कार्य की उच्चता-नीचता नियत होती है।

कीर्ति कामना—कीर्ति के लिए समाज सेवा करना कुछ कम पुण्यशाली नहीं है। इन्सान इतना ही कर सके तब भी बहुत है। कीर्ति की कामना को बदनाम करना तो धर्मध्वजीपन है। बदनाम वे करते हैं जो अभी पृथ्वी पर ही रींगते हैं। लोमड़ी के हाथ अंगूर नहीं लगते, तो वह उन्हें खट्टा ही कहेगी। परन्तु उसके कहनेसे वे खट्टे नहीं हो जाते। कीर्ति की कीमत उन रस-सिद्ध कवीश्वरों से पूछनी चाहिए जो जीवनरक्त से काव्य 'यश से' अपनी अमर कृति की रचना करते हैं।

कर्त्तव्यनिष्ठा—सच ही कहा है Fame is the last infirmity of man' यदि कोई इन्सान कीर्ति-कामना छोड़ सके और केवल

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

कर्त्तव्य भावना से समाज सेवा के कार्य कर सके, तब तो वह इन्सान नहीं देव होगा। उस अवस्था में उसका समाज सेवा कार्य भक्ति की परिधि या पुण्यदेश में पहुँच जाता है। ऐसा होना असम्भव नहीं। इन्सान देव बन ही सकता है। सहस्रों भक्तों ने स्वजीवन से यह सिद्ध किया है। छोटे से बड़े होते-होते तथा समझदार व लायक बनते २ हमने न जाने किस किसकी कितनी सेवा और सहायता ली है।

यही नहीं, जब तक जीते हैं, समाज में सैकड़ों लाभ लिये ही जीते हैं। इन सबका बदला चुकाना हमारा परम कर्त्तव्य है। असहाय अवस्था में जिन्होंने हमारी सहायता की जिन्हें अपनी असहाय अवस्था में अब हमारी सेवा की जरूरत है, उनकी सेवा न करना असीम कृतघ्नता है। कृतघ्नता ऐसा महापाप है जिसका शास्त्र कोई प्रायश्चित नहीं बता सके हैं। इस सबका जो विचार करेगा, उसका कर्त्तव्यबुद्धि से सेवाकार्य में प्रवृत्त होना, कौन कठिन है ?

जिसमें कर्त्तव्यबुद्धि जागृत नहीं हुई, वह अपने घर गृहस्थी के कामकाज में जुटा रहे यही बेहतर है।

नम्रता—सेवा करते हुए, एहसान जताने की क्या जरूरत है ? सेवामय जीवन में नम्रता होनी चाहिए क्योंकि अहंकार सेवा को शून्यवत् बना देता है।

सगे सम्बन्धियों तथा समाज का हम पर जो बोझ है, उससे किसी भी समझदार का माथा आप-से-आप नम जाना चाहिए। जीवन भर सेवा करते-करते भी, इस ऋण से ठीक-ठीक उऋण हम शायद ही हो सकें, यह कल्पना भी सेवापरायण को अत्यन्त नम्र होने के लिए प्रेरित करती है। समाज-सेवा के कार्य (यज्ञ) के साथ, नम्रता की भावना होना अत्यन्त जरूरी है, इसी दृष्टि से यजुर्वेद में 'यज्ञो वै नमः' यज्ञ को नम्रता ही कह दिया है।

निष्कामता—किसी बदले की आशा से सेवा की जाती है वह तो असल में सौदा ही होती है। शुद्धसात्विक सेवा तो 'अफलकांक्षिभिः'

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

निष्काम और निरीह व्यक्तियों द्वारा ही निष्पन्न होती है। फल तो हम पहले ही ले चुके हैं, फिर और किसी फल की इच्छा करना, अनुचित लोभ-लालच ही है। समाजसेवा ऋण-मुक्ति के लिए ही है। हम समाजद्रोही न बनें, इसलिए सेवा करनी हैं। हम पाप न खाएं, 'भोगान् रुधिरप्रदिग्धान्' हमारे भोग खून से लथपथ न हों, इसलिए समाज-सेवा है। चोरी का शूल, अन्तःकरण की शान्ति को सब काल के लिए भङ्ग न कर दे, इसलिए समाजसेवा है।

उत्साह—फल की लालसा न होते हुए भी समाजसेवा के कार्य में उत्साह होना जरूरी है। फल की अपेक्षा के बिना उत्साह कैसे हो? उत्साह केवल फल की ममता से ही नहीं, कर्म की भावना से भी उत्पन्न होता है, वह भी तो वस्तुतः लोभ का प्रछन्न रूप ही होता है। इस लोभ से हाथ-पैर काँपते हैं तथा बुद्धि की तीक्ष्णता जाती रहती है। परिणामतः कर्म में आवश्यक दक्षता आती नहीं। भाग दौड़ भले सौ गुना बढ जाती हो, सफलता हाथ कम ही

समाजसेवा (यज्ञ) में दीक्षित होने के लिए कुछ महत्वपूर्ण निर्देश यहाँ दिये गये हैं। प्रत्येक श्रेयार्थी को चाहिए कि वह प्रतिदिन के जीवन में इन्हें धारण करने का प्रयत्न करे। —सम्पा०

लगती है। इसके विपरीत कर्त्तव्य भावना से उत्पन्न उत्साह ही सच्चा उत्साह होता है। इसके लिए मनुष्य की कर्त्तव्यबुद्धि विकसित करने की आवश्यकता अवश्य रहती है। जिनकी कर्त्तव्यबुद्धि विकसित होती है वे कर्मण्य कहलाते हैं। कर्मण्य लोगों को सेवा और सहायता के कार्य ही फलस्वरूप लगने लगते हैं। इसलिए लोकोपकारी कर्मों की ओर, वे उसी उत्साह उमंग से प्रवृत्त होते हैं, जिस उत्साह-उमंग से फललोभी फल की ओर लपकते हैं।

उत्साह पूर्ण हो तो कर्म में सफलता मिलनी ही चाहिए।

सेवा (यज्ञ) का फल—समाज सेवा (यज्ञ), भोग की इच्छा

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

मर्यादा में रखती है। यही तो धर्म है । जीवन निष्पाप इसी से बनता है ।

समाज सेवा (यज्ञ) से शरीर, मन तथा बुद्धि की सर्व शक्तियों का सत्कर्म में सदुपयोग होता है इस सदुपयोग से शुभ संस्कारों का उदय होता है। दूषित विचारों तथा वासनाओं (काम, क्रोध, लोभ, मोह, मद, मत्सर आदि वासनाओं के विभिन्न रूपों) का शनः २ क्षय होता है। इस सबसे चित्त शुद्ध होता है ।

जो अयज्ञ है—सेवा धर्म छोड़कर सुख-चैन और मौज-मजे उड़ाने में पड़ा है—उसका यह लोक भी बिगड़ता है, परलोक भी। वह न सच्चा आनन्द पाता है, न चित्त को अनुपम शान्ति, न प्रेम न प्रतिष्ठा, न अभ्युदय और न अमरत्व। ★

अमर भारत—

वीराङ्गना देवसेना —श्री वसन्तकुमार

उत्तराखण्ड के पश्चिम से उड़कर प्रलयङ्कारी जलधर शस्य श्यामला धरणी को कम्पित करते, मालव की धरा तक आये हूणों ने मालव पर गान्धार की ओर से आक्रमण किया। उनके अत्याचारों से पंचनद की जलराशि लाल होने लगी—त्राहि २ मच गई । मालवेश बन्धुवर्मा और उनके महाबलाधिकृत स्कन्धगुप्त ने अपने सुखों को कर्तव्य की प्रेरणा में भुला दिया। मालवेश रणक्षेत्र में गए, साथ ही मालवेश्वरी और उनकी बहन कुमारी देवसेना भी।

कुम्भा नदी के भारतीय-तट पर शिविर में मालवेश्वरी और देवसेना आहतों की शुश्रूषा कर अपने को धन्य समझती थीं। एक सायं, एक अश्वारोही आकर मालवेश्वरी के चरणों पर गिर पड़ा। मालवेश्वरी का हृदय काँप उठा····अज्ञात आशङ्का से सिहर उठीं ! पर वे वीर वधू थीं····जी कड़ा कर पूछा—

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

"क्या हुआ सैनिक ? बोलो न····मैं कुछ न कहूँगी ! कठोर सत्य चाहे सुखद हो या नहीं, सुनना ही पड़ता है।"

अश्वारोही हतबुद्धि सा हुआ, रुंधे स्वर से बोला—'कुछ सैनिकों के साथ आये पण्डित से सुना गया हमारे मालवेश ने सैकड़ों हूणों को धराशायी कर वीर-गति प्राप्त की····।"

"भाभी ···"—कहकर असहाय देवसेना का स्वर रुंध गया। अरुण कपोलों पर आँसू की धारा बहने लगी ! मालवेश्वरी के वीर हृदय की नारी सिहर उठी। अपने प्रिय की अनुजा देवसेना को वक्ष से लगाकर वे रोईं····इतना रोईं कि उन्हें धीरे २ आँसुओं में अपना कर्त्तव्य दीखने लगा। उन्होंने शान्त स्वर में कहा—'बहन ! प्रिय मेरी प्रतीक्षा कर रहे होंगे, मेरी चिर-दुखिनी बहन !! मुझे क्षमा कर एक बार हँस दो ! हृदय की व्यथा को छुपाकर बस एक बार हँस दो। मालव की वीर बेटी, तुम्हें आँसू शोभा नहीं देते ! तुम्हारे भाई ने तुम्हें अनुजा नहीं—अनुज माना। भारत की स्वतन्त्रता तुम्हारी ओर आशा से तक रही है।"

'जाओ भाभी ! तुम भी जाती हो····भैया तो गये····भाभी !"

कुम्भा की लहरें सिहर उठीं। अपने प्रिय की चिता पर बैठ सती मालवेश्वरी अपने प्राणेश्वर के समीप चली गईं.तब वृद्ध सेनापति ने शान्त स्वर में कहा—'चल बेटी ! हमारा कर्त्तव्य···· !'

'और कितना बलिदान चाहता है, बाबा ? सब गया····ओह !' —कहती देवसेना पीड़ा से तड़प उठी।

वृद्ध ने उसके रूखे-काले केशों को स्नेह से समेटकर करुण स्वर में कहा—'राष्ट्र के आहूत वीरों के लिए सब कुछ करना होगा। बेटी, भारत जननी एक बार फिर तुमसे त्याग चाहती है।" उसकी आँखें गड़ी हुई थीं चिता के दहकते अङ्गारों की ओर, उसने देखा चुपचाप बहती कुम्भा की धारा को ! उसकी स्मृति में उभर उठीं—क्षिप्रा की चञ्चल उर्मिल लहरें, जो पुकार २ कर कह रही थीं····'तुम मालव देकर साम्राज्ञी बनना चाहती हो····?' उस गर्विणी तरुणी ने

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

कहा····नहीं' किन्तु हृदय सिहर उठा ! दीप सिहरकर बुझ गया, रह गया था, केवल अन्धकार ! उसकी साँसें चोख उठीं—मैं साम्राज्ञी नहीं बनूँगी····!' विचारों की लड़ियाँ टूट गईं उसने निश्चय किया वह रक्तिम हूणों का नाश करेगी ! सर्वस्व त्याग कर····। उसका दृढ़ स्वर था—'चलो बाबा····।'

सती की समाधि पर श्वेत वसना तरुणी देवसेना बिखरे पुष्पों पर सिर रखे कुछ सोच रही थी। तभी····'देवसेना'····चिर-परिचित स्वर में सुन उसने चौंककर देखा तो सम्राट् स्कन्धगुप्त उसके सम्मुख थे। आप ही आप कोमल कर अभिवादन के लिए उठे। अतीत के स्वर्णिम दिनों की भाँति दो नयनों ने देखा ! उसका प्रणय सम्राट् स्कन्धगुप्त को अपना चुका था।

'देवसेना ! आज सब कुछ खोकर मैंने तुम्हें प्राप्त कर लिया, चलो जीवन के शेष दिन इस स्वार्थी संसार से दूर—सुदूर में बितायें। मुझे पूर्ण विश्वास है कि मेरा अनुरोध तुम ठुकराओगी नहीं।'

वृद्ध सेनापति जो स्वस्थ सैनिकों के साथ समीप आ चुके थे, उनका हर्ष पूर्ण स्वर था—'हाँ बेटी तुम साम्राज्ञी बनो, तुम्हारी चिर-आकाँक्षा पूरी हो।'

आकाँक्षा ! ····मेरी आकांक्षा····!!

कहती हुई वह सिहर उठीं। उसकी आँखों में तैर रही थी भाभी के चित्र और कानों में गूंज रहे थे स्वर····भाभी ने कहा था···· मातृभूमि तुम्हें निहार रही है, बहन ! साम्राज्ञी बनना चाहती हो, मतलब देकर····? उसे प्रतीत हुआ—सती मालवेश्वरी को लपटें उसकी ओर बढ़ती हुई कह रही हैं—'तुम्हारा कर्त्तव्य तुमसे त्याग चाहता है, बहन।' देवसेना ने व्याकुल होकर सुकोमल कर से चन्द्र मुख को ढक लिया। फिर कुछ सोचकर समीप के तीक्ष्ण काँटे से अंगुली को चीरकर बहते हुए रक्त से सम्राट् का तिलक किया, फिर उनके चरणों पर झुककर बोली—'सम्राट् ! मेरे देवता !! प्रलयकारी हूणों से मातृ भूमि रक्षा चाहती है। आप उसके कातर अनुरोध को न ठुकराइये,

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

आप वीर हैं। मैंने आपसे कभी कुछ नहीं माँगा, आज माँगती हूँ। मातृभूमि को विध्वंसकारी ज्वाला के निःश्वास से बचा लीजिये। विजय के क्षण में याद कर लीजिएगा, मैं धन्य हो जाऊँगी····। मैंने जीवन भर आपकी अर्चना की और करती रहूँगी। मेरे देवता, विदा दो। मालव-माता मेरी प्रतीक्षा कर रही है। मालव की स्वतन्त्रता रक्षा के सहायतार्थ मालव की वीर भूमि पर अब मैं शेष जीवन बसेरा लेने जा रही हूँ।'

'तुम, मत जाओ देवसेना' उनका स्वर रुद्धा हुआ था।

'अब मुझे न रोकिये!'—कहती हुई देवसेना धीरे २ चली गई—अन्धकार में विलीन हो गई····! सम्राट् दीपक की ओर बढ़े और सती की समाधि के पास, आजीवन कौमार्य जीवन निभाते हुए हूणों का नाश करने की शपथ ली। वन भूमि जय-जयकार से गूंज उठी। दीपक की आभा दीप्त हो गई····शायद वह मालवेश कुमारी देवसेना के स्नेह से प्रज्वलित हो उठी थी, सम्राट् का अस्फुट स्वर था—'मालवेश बन्धुवर्मा की अनुजा देवसेना तो चली गई, किन्तु एक ज्योति दिखाकर जो कभी भूली नहीं जा सकेगी।'

वह ज्योति इतनी आलोकित हुई कि उस आलोक में हूणों का अन्धकार सदा के लिए विलीन हो गया।

कल्याण का यथार्थ स्वरूप

जैसे नदी के दोनों ओर खड़े हुए लोग बीच की प्रबल जलधारा के भय से नहीं मिल पाते—उनको मिलाने के लिये उस जलधारा पर पुल बाँधने वाले, बीच की गहरी और चौड़ी दरार को भरकर सुन्दर मार्ग का निर्माण करने वाले और जैसे धागा अपना प्रिय अङ्ग देकर सुई के किये हुए छेद को भर देता है वैसे ही अपना बलिदान करके दूसरों के छिद्रों को छिपा देने वाले लोग ही प्रेम का यथार्थ विस्तार करके द्वेष-वैर और हिंसा-प्रतिहिंसा की ज्वाला से जलते हुए जगत् को सुख-शान्ति की सुधाधारा से आप्लावित कर उसका सच्चा हित कर सकते हैं और उनका अपना हित भी इसी में भरा है।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

वर्तमान युग में महर्षि दयानन्द का सापेक्षिक महत्व

श्री दरबारीलालजी, दिल्ली

भारत आज अपने इतिहास में कठिन संकट का सामना कर रहा है। आज वह भौतिक दृष्टि से चाहे उन्नत हो रहा हो, पर सम्यक् निर्णय में प्रबुद्ध नहीं है। देश में आर्य सभ्यता का ह्रास होता चला जा रहा है। जिसके परिणाम स्वरूप राजनैतिक अस्थिरता, आर्थिक संकट, सामाजिक विघटन तथा धार्मिक कोलाहल की भावना छाई हुई है। इस भयावह स्थिति ने आज हमारे राष्ट्र के अस्तित्व को खतरे में डाल दिया है। अतः इस समय आवश्यकता है स्वामी दयानन्द जसे लोकनायक एवं महात्मा की तथा उसके सार्वभौम जीवन-दर्शन की जो पुनः वही आदर्शमयी स्थिति ला सके।

कहने को आज हम स्वतन्त्र हैं और लोकतन्त्र का उपभोग कर रहे हैं, किन्तु अभी तक हमारे देश में लोकतन्त्र की सफलता के हेतु मूल आधार एवं राष्ट्र निष्ठा का विकास नहीं हो सका है। आत्म-गौरव से हीन एवं मानसिक दासता से ग्रस्त हमारे लोकतन्त्र में विदेशी विकृतियाँ विघटनकारी तत्वों को बढ़ावा देकर नाना प्रकार केषड्तन्त्र करने में निरन्तर संलग्न हैं। परिणाम स्वरूप हम विकट परिस्थितियों एवं जटिल समस्याओं से घिरते जा रहे हैं। लोकतन्त्र और राजनैतिक स्वतन्त्रता के वरदान हमारे लिए अभिशाप हो रहे हैं। स्पष्ट है कि हमारे लोकतन्त्र के संविधान में ही कहीं कमी है। ऐसी अवस्था में हमारे प्राचीन ऋषि-मुनियों द्वारा प्रणीत और स्वामी दयानन्द द्वारा अनुमोदित शासन प्रणाली एवं राज्य-व्यवस्था एक आलोक स्तम्भ के समान होगी। संसार में सुराज्य (अच्छा राज्य) (अपना राज्य) का वर्णन बड़े २ विद्वानों ने अपने भाषणों और ग्रन्थों में किया है, परन्तु स्वामी दयानन्द जो महाराज पहले व्यक्ति हैं जिन्होंने सुराज्य और स्वराज्य के साथ न्याय राज्य पर बहुत बल

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

दिया है। उनका विश्वास था कि जिस राज्य में अन्याय है, वह राज्य बहुत काल तक स्थिर नहीं रह सकता। इसलिए वह न्याय-राज्य की ईश्वरीय-राज्य के साथ उपमा दिया करते थे। इस समय देश में प्रजा-तन्त्र, एक राजा राज्य, तानाशाही शासनों का प्रचार है। स्वामी दयानन्द जी महाराज ने आज से ९६ वर्ष पूर्व ही वेदादि शास्त्रों के आधार से ऐसी शासन-पद्धति का विचार दिया कि जिससे कोई भी स्वतन्त्रता को प्राप्त कर उच्छृंखलता न कर सके। उन्होंने सत्यार्थ प्रकाश में लिखा है कि 'एक को स्वतन्त्र राज्य का अधिकार न देना चाहिए, किन्तु राजा जो सभापति तदाधीन सभा, सभाधीन राजा, राजा और सभा प्रजा के अधीन, और प्रजा राजसभा के अधीन रहे।' स्वामीजी ने तीन सभाओं—विद्या-सभा, धर्म सभा और राज-सभा के अधीन सभी राज्य-कार्यों की व्यवस्था निर्दिष्ट की है। उन्होंने वहीं पर राज्याधिकारी तथा राजकर्मचारी कैसे हों, उनमें क्या-क्या योग्यताएं हों तथा उनके अधिकार एवं कर्त्तव्यों का उल्लेख किया है। यदि उसके अनुसार राज्य-व्यवस्था चलाई जाय तो एक आदर्श राज्य, जिसे स्वामी दयानन्द के सपनों का आदर्श राज्य कह सकते हैं स्थापित हो सकता है। आज की राजनीति भौतिकतावादी है। इसमें स्वार्थी, दल बदलू एवं अयोग्य व्यक्तियों की भरमार है। इस दृष्टि से स्वामीजी द्वारा निर्दिष्ट राजा का ब्रह्मचर्य के तप से राष्ट्र की रक्षा करना तथा राजपुरुषों की दिनचर्या में योगाभ्यास का समावेश मार्गदर्शक होगा। स्वामी दयानन्द की राजनीति सत्य, सनातन, शाश्वत धार्मिक सिद्धान्तों की होगी, जिसमें एक प्रकार से राजनीति को आध्यात्मिक धरातल प्रदान करके धर्म के आधार पर चलाया जायगा। इस प्रकार उनकी राजनीति सम्प्रदाय निरपेक्ष होकर सत्य, सनातन, शाश्वत सार्वजनिक वैदिक सिद्धान्तों के आधार पर एक नई दिशा की ओर प्रवृत्त होगी।

आज हमारा जीवन तप प्रधान न होकर भोग प्रधान हो गया है, जिसके फलस्वरूप सामाजिक समस्याओं का बाहुल्य हो गया है। वर्ण-व्यवस्था तथा आश्रम-व्यवस्था के विशृंखलित हो जाने के कारण

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

हमारा जीवन राजसिक और तामसिक होता जा रहा है। समाज में सात्विकता की भावना लुप्त होती जा रही है। इससे घरेलू लड़ाई-झगड़ों में दिन-प्रतिदिन वृद्धि होती जा रही है। पाश्चात्य प्रभाव के कारण प्रेम-विवाह तथा उच्छृंखलता की बढ़ोत्तरी होती जा रही है। समाज में वयोवृद्ध लोग अपनी सत्ता, पदवी, गद्दी तथा अधिकारों को त्यागने का नाम नहीं लेते। इसलिए नवयुवक वर्ग में विद्रोह की भावना का आना स्वाभाविक है।

तरुण वर्ग द्वारा माता-पिता तथा बड़ों का अपमान इसी कारण हो रहा है। आज यदि स्वामी दयानन्द जीवित होते तो वे आश्रम-व्यवस्था का पालन करने का आदेश देते। प्राचीन ऋषियों की वान-प्रस्थ की भावना एक प्रकार से आर्थिक विषमताओं को दूर करने का एकमात्र उपाय है। इसी प्रकार अन्य आश्रम भी मनुष्य जीवन को सार्थक एवं उज्ज्वल बनाने में अत्यन्त सहायक हैं। स्वामी जी ने अपनी सामाजिक नीति को आर्यसमाज के निम्नलिखित दो नियमों में बड़ी कुशलता से वर्णित किया है—

१—संसार का उपकार करना इस समाज का मुख्य उद्देश्य है। अर्थात् शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति करना।

२—प्रत्येक को अपनी ही उन्नति में सन्तुष्ट न रहना चाहिए, किन्तु सबकी उन्नति में अपनी उन्नति समझनी चाहिए।

वस्तुतः यही आर्यों का समाजवाद है जो भारतीय संस्कृति एवं परिस्थितियों के सर्वथा अनुकूल है। इस प्रकार स्वामी जी की विचार-धारा के अनुसार गुण, कर्म, स्वभावानुसार कार्य-व्यवस्था के आधार पर समाज का निर्माण हो, और प्रत्येक व्यक्ति की उन्नति का मार्ग प्रशस्त हो। समाज पर से धनिकों की गुलामी दूर हो। सामाजिक व्यवस्था में न शोषण हो और न ही संघर्ष। वास्तव में आज हमें ऐसे ही समाजवाद की आवश्यकता है जिसमें वैयक्तिक स्वतन्त्रता निहित हो।

स्वामी दयानन्द के समय ईसाई धर्म का प्रचार हो रहा था।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

उन्होंने उनसे कहा--हमारे यहां धर्म का प्रचार मत करो क्योंकि हमारे पास पर्याप्त धर्म है। उन्होंने इस विषय में अपने हृदयोद्गार इस प्रकार प्रकट किए थे--

'मेरा दुःख औषधि से दूर नहीं होगा। मेरी पीड़ा भारत के परिश्रमी लोगों की दुर्दशा के चिन्तन में चित्त में उत्पन्न हुई है। ईसाई लोग कोल-भील आदि भारतवासियों को ईसाई बना रहे हैं और रुपया पानी की तरह बहाते हैं, परन्तु आर्य जाति कुम्भकरण की नींद में सोई पड़ी है। उसके कानों पर जूं तक नहीं रेंगती। मैं अब चाहता हूँ कि राजे-महाराजाओं को सन्मार्ग पर लाकर जाति का सुधार करूँ और जाति को एक उद्देश्य रूपी सुदृढ़ सूत्र में बाँध दूँ। 'परन्तु बड़े दुःख के साथ कहना पड़ रहा है कि १५० वर्षों के ब्रिटिश शासन में ईसाई मिशनरियों ने देश में ईसाईयत का जितना प्रचार नहीं किया था, उतना स्वराज्य प्राप्ति के पश्चात् ३१ वर्षों में हुआ है। आज यह अराष्ट्रीय कार्य आर्य-भक्तों के लिए चिन्ता का विषय बना हुआ है। इसके अतिरिक्त हमारे देश में सहस्रों मत-मतान्तरों की बाढ़ भी आई हुई है। आज हमारी संस्कृति को खिचड़ी बताया जा रहा है, क्योंकि हमारी धार्मिक विचारधारा में घोर मत वैविध्य पाया जाता है। इसलिए हमारे नवयुवकों को अपनी संस्कृति का कोई ज्ञान नहीं। उनमें उसके प्रति अपनत्व की भावना नहीं है। वे कार्ल मार्क्स के गीत गा रहे हैं, परन्तु उन्हें अपने ऋषि-मुनियों एवं आचार्यों के विषय में कुछ ज्ञान नहीं है। स्वामी दयानन्द वैदिक धर्म के प्रबल समर्थक होते हुए भी दुराग्रही नहीं थे। वे सभी धर्मों की सच्चाइयों को उसी प्रकार सहर्ष स्वीकार करते थे जिस प्रकार सभी मत-मतान्तरों के मिथ्या विश्वासों का निर्भय खण्डन। यही कारण है कि उनके शिष्यों में न केवल हिन्दू, अपितु मुसलमान, सिख और ईसाई भी थे। अतः आज यदि स्वामी दयानन्द होते तो वे वैदिक धर्म को राजधर्म घोषित करते, जिसमें उपर्युक्त सभी गुणों का समावेश होता। ★

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

गुरुकुलों में पहले आठ वर्ष तक की उम्र के ही बच्चे लिये जाते थे। गुरुकुल वालों की मान्यता थी कि अधिक उम्र के बच्चों में संस्कार भरने में कठिनाई रहती है। मैं भी इसी उम्र में गुरुकुल भेज दिया गया। तीन वर्ष ही अध्ययन करते बीते थे। सातवीं कक्षा में मैं पढ़ रहा था। अचानक गुरुकुल की बड़ी श्रेणियों में पढ़ने वाले छात्रों कोमेरठ जाने की अनुमति अपने संरक्षक (वार्डन) के साथ मिली, अगले दिन वहाँ सुभाषचन्द्र बोस का भाषण था। हम भी सुभाष बाबू का भाषण सुनना और उन्हें देखना चाहते थे। पर छोटे बच्चे कहकर हमारा अनुरोध ठुकरा दिया गया। सुभाष बाबू की उन दिनों बड़ी धूम थी। मेरी कक्षा का एक मराठी छात्र और मैं अनुमति न मिलने पर रात को छात्रावास की दीवार लाँघ कर निकल गये और रेल द्वारा मेरठ पहुँच गये।

संस्मरण—

भाषण सुनने की सजा

✱ श्री प्रकाशवीर जी शास्त्री
[प्रस्तुति : श्री शिवमोहन श्रीवास्तव]

प्रातः छात्रावास में जब दो छात्र गैरहाजिर मिले तो खोज प्रारम्भ हुई। यह किसीको सन्देह ही नहीं था कि हम दोनों मेरठ भी जा सकते है! पूरे दिन जब हम नहीं मिले तो घर वालों को सूचना दी गई—छात्र गायब, जल्दी पहुँचो!

घर समाचार पहुँचते ही घबराहट होनी स्वाभाविक थी। अगले दिन जब हम दोनों गुरुकुल पहुँचे तो वहां हमारी खोज चल रही थी। सही कारण बताने पर अधिकारियों को विश्वास नहीं हुआ।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

पर सुभाष बाबू का एक वाक्य जो बड़े विद्यार्थियों ने भी सुनाया था '—अपना हो या पराया, जो देश की आजादी में रोड़ा बनता है उसे उठाकर फेंक दो !' यह हमारा साथ दे गया। बड़ी श्रेणी के छात्रों को जब यह पता चला कि हमें मेरठ जाने पर दण्ड मिलने वाला है तो वह भी हमारे साथ हो लिये।

उधर घर से पिताजी भी आ पहुँचे। उन्हें जब सारा किस्सा सुनाया गया तो डर था कि डाँट कहीं उधर से भी न पड़े, पर उन्होंने सुनकर मुझसे से तो इतना ही कहा, 'आज्ञा लेकर जाते तो अच्छा होता।' पर छात्रावास के संरक्षक को उन्होंने कहा 'सुभाष बाबू का भाषण सुनाने तो स्वयं आपकोही सब छात्रों को ले जाना चाहिए था। इन दो छात्रों ने तो आपकी भूल का सुधार किया है।' × ×

इस तरह वह बात संभल गई। सुभाष बाबू को उस दिन मेरठ में पहली और अन्तिम बार ही मैंने देखा। उसके कुछ समय बाद तो वह भारत ही छोड़ गये।

आज सोचता हूँ कि उस दिन मेरठ न गया होता तो एक महा-पुरुष के दर्शन से बंचित रह जाता ! ★

खानदानी आर्यसमाजी

कुछ समय पूर्व मेरे भाई एक कन्या का सम्बन्ध तय करने एक दूर के कस्बे में गये थे। विदित हुआ था, वह परिवार भी आर्य समाजी ही है। उनके साथ एक और व्यक्ति थे। वह बड़े सीधे-साधे और पुराने विचार के थे।

स्वागत की पहली अस्म अदा करने के उपरान्त साँस्कृतिक परम्परा के अनुसार लोटे में शीतल जल आया। धूल से सने पैर वह धो ही रहे थे कि जलपान उनकी प्रतीक्षा करने लगा। अस्तु,इन सबसे निबट कर परस्पर बातें होने लगीं।

लड़के के दादा ने बातचीत प्रारम्भ करते हुए पूछा—

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

क्या मैं जान सकता हूँ कि आप लोग कहाँ के रहने वाले हैं।

'जिला मुँगेर के चेवारा का हूँ।, बस, भाई सहाब के साथ एक और जो आदमी थे इन्हीं शब्दों में उन्होंने उत्तर दिया।

'आपका क्या नाम है ?' अंगुली भाईसहाब की ओर थी।

'ईश्वरचन्द्र आर्य'

'बहुत अच्छा' कहकर वह चुप हो गये।

थोड़ी देर बाद भाईसहाब बोले—'अच्छा हम लड़का देखलें।'

'हाँ,हाँ, हर्ज क्या है। मेरे यहाँ जो लड़का है उसे दिखा देताहूँ।

बैठे ही बठे लड़के का नाम लेकर उन्होंने पुकारा और एक १७-१८ वर्ष का स्वस्थ किशोर अभिवादन कर सामने खड़ा हो गया।

पूछताछ कर लेने के पश्चात् उसे जाने की अनुमति मिल गई, वह चला गया। लड़के के वहाँ से हटते ही उसके दादा ने पूछा, 'कहिये, लड़का पसन्द आया ? 'बिल्कुल पसन्द ही पसन्द आया।' भाई सहाब बहुत खुश हुए। लड़का उनके मन में गढ़ गया था।

लड़के के दादा ने हाथ जोड़ते हुए कहा, 'क्षमा कीजिएगा, क्या मैं पूछ सकता हूँ कि आप कितने दिनों से आर्यसमाजी हैं ?'

'जब से होश संभाला है तभी से आर्यसमाजी हूँ।'

'क्षमा करें आप खानदानी आर्यसमाजी नहीं हैं। यदि होते तो १७-१८ साल के लड़के के साथ विवाह की बात नहीं करते। विवाह के लिए लड़के की आयु कम से कम २५ वर्ष तो होनी ही चाहिए।'

भाईसहाब ने सुना तो घड़ों पानी पड़ गया। उनकी आखें खुल गई थीं। सोचा चलो, इस बहाने एक शिक्षा तो मिली। उनके मन में उपदेशक के प्रति अगाध श्रद्धा उमड़ पड़ी थी, जिसने ज्ञान के भण्डार में एक और कीमती रत्न बढ़ा दिया था।

'आपके उपदेश से मेरी आत्मा को बड़ा आननन्द हुआ है। कभी न कभी आपके यहाँ रिश्ता अवश्य करूँगा।' लौटते समय अनायास भाई सहाब के मुँह से निकल पड़ा। ★

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

जय ज्ञान जय विवेक

मेरे एक बहुत घनिष्ठ मित्र थे। एक दिन वह हमारे घर आए और बातें करते-करते रात के आठ बज गए। जब वह घर वापस जाने को तैयार हुए तो मैं उन को बाहर दरवाजे तक छोड़ने आया जहां उन का स्कूटर खड़ा था। ज्यों ही उन्होंने किक लगाई, वह स्टार्ट हो गया जब कि पहले स्टार्ट होने में पांच से दस मिनिट लग जाते थे, क्योंकि स्कूटर काफी खस्ता हालत में था। पहली किक में ही स्टार्ट देख मैंने हँस कर कह दिया, 'वाह, भाई, आज तो तुम्हारे स्कूटर ने कमाल कर दिया है।'

मुस्कराते हुए उन्होंने जवाब दिया, 'अरे छोड़ो यार, नजर मत लगाओ।'

रास्ते में अंधेरा होने के कारण उनका स्कूटर स्लिप कर गया जिसके कारण उनको काफी चोटें आईं। सुबह जब मैं उनके घर हालचाल पूछने गया तो परिवार के सभी सदस्य मुझसे कुछ खिचे २ नजर आए। उस वक्त तो मैं कुछ न समझ सका। पर बाद में मालूम हुआ कि वे लोग इस दुर्घटना का मुख्य कारण मुझे ही समझ रहे थे। उन के कथनानुसार मेरी नजर लगने से ही यह सारी मुसीबत आई थी। उस दिन के बाद से मित्र महोदय ने हमारे घर आना बिल्कुल समाप्त कर दिया। इस तरह वर्षों पुरानी मित्रता देखते ही देखते नजर की भेंट चढ़ गई। —श्री ओम्प्रकाश अरोड़ा

बिखरे मोती

मनुष्य परिस्थितियों का दास नहीं' अपितु परिस्थितियाँ मनुष्य की दासी हैं। —डिजरायली

धैर्य और परिश्रम से हम जो कुछ प्राप्त कर सकते हैं, वह शक्ति और शीघ्रता से नहीं। —लाकान्टेन

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

लघु कथा—

श्रम और लक्ष्मी

एक युवक भूमि खोदने में मगन था। सड़क पर चलते हुए एक राही को दया आ गई और पूछ ही लिया, 'दोस्त, ऐसी तपती दोपहरी में कठोर परिश्रम करने से क्या लाभ ?'

—'श्रम, श्रम के लिए····श्रम का फल मीठा होता है।' युवक का उत्तर था।

'बन्धु, इस प्रकार श्रम करते हुए कितना समय हो चुका ?'

—'पथिक, समय का तो मुझे पता नहीं पर इस प्रकार की सैकड़ों दोपहरियां आईं और चली गईं····आखिर जिस काम को जितना समय चाहिये, वह तो लगाना ही पड़ेगा ?'

'तुम मूर्ख हो ! इतना समय परिश्रम से किसी मकान का निर्माण करते तो कुछ आश्रय मिल जाता तुम्हें।'

युवक मुस्करा दिया।

× × ×

राही यात्रा से लौट रहा था। युवक पत्थर पर छैनी हथौड़ा चला रहा था। देखते ही यात्री ने पूछा, 'अभी तुम्हारी मूर्खता का क्रम खतम नहीं हुआ ?'

—'पथिक, थोड़ी देर बैठकर प्रतीक्षा करो।' युवक ने कहा।

थोड़ी ही देर में छैनियों की चोट से तरश तरश कर पत्थर चमकने लगा। कुछ ही समय में रत्न बनकर तैयार हो गया। दमकते हीरे को आँखें फाड़ कर देखते हुए राही ने कहा—'यह क्या ?'

—'कुछ नहीं श्रम का फल।' युवक ने पसीना पोंछते हुए कहा।'

'बन्धु क्षमा करना—मैं तुम्हारे परिश्रम को समझ न सका।'

—दुःख करने की जरूरत नहीं भाई। फल मिलने से पहले—श्रम या मेहनत के बारे में लोग यही सोचते हैं—मगर उद्योगी उस कारण उद्योग नहीं छोड़ देता।' ※

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

बच्चे और अनुशासन

बच्चों में अनुशासन की भावना कैसे भरी जाये, यह प्रश्न सारे राष्ट्र के हित का है। अनुशासित बच्चे ही बड़े होकर सभ्य नागरिक बनते हैं। पर कुछ लोगों को अनुशासन के नाम से ही चिढ़ है। इस चिढ़ का कारण अनुशासन के असली रूप को न समझना है। इन लोगों के लिए अनुशासन का अर्थ है—डांट-डपट और मार-पीट के जोर से बच्चों को काबू में रखना। कुछ लोग अनुशासन मात्र को ही व्यर्थ और हानिकारक मानने लगे हैं। उनका तर्क है कि अनुशासन से बच्चों का स्वाभाविक विकास रुकेगा। लेकिन बड़ों को बच्चों की रहनुमाई करनी ही होगी। जीवन की चकरीली और पथरीली घाटियों में अपना रास्ता खुद बनाने का बोझ इन नन्हे-मुन्नों पर डालना, इनके साथ ज्यादती करना है।

प्रायः यह देखा गया है कि अनुशासन की माँग बच्चों की ओर से ही आती है। सीमा दूसरे कमरे में बच्चों के साथ खेल रही है। खेलते-खेलते वह एक-दम चीख उठती है। माँ को देखते ही वह भाग कर उससे लिपट जाती है और रोती हुई कहती है कि कमल ने उसे मारा है। सीमा की ओर से यह अनुशासन की मांग नहीं तो और क्या है? उसकी चीख मां के लिए अनुशासन की पुकार है।

अनुशासन का अर्थ डंडा नहीं है। उसके अर्थ हैं बच्चों के मन में धीरे २ यह भाव भर देना कि परिवार में रहने के कुछ कायदे होते हैं। जो बच्चे उनका पालन करते हैं वे अच्छे समझे जाते हैं, उनके माता-पिता सदा उनकी प्रशंसा करते हैं। जो बच्चे उन कायदों को नहीं मानते उनकी गिनती गन्दे बच्चों में होती है और उनके माता-पिताउनसे नाराज रहते हैं। जब उनकी समझ में यह बात अच्छी तरह आ जाती है कि इस घर में सबसे अधिक प्यार उस बच्चे को मिलता

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

है, जो परिवार के कायदों को मानता है, तो माता-पिता को प्रसन्न करने के लिए। वे अपने आप ही अनुशासन मानने लगते हैं। माता-पिता को इस बात का विशेष रूप से ध्यान रखना होगा कि आज्ञाकारी बच्चे का घर में आदर हो और अड़ियल बच्चे की जिद्द को न सहा जाये।

अनुशासन की नींव है आज्ञाकारिता। बच्चों में बड़ों का कहना मानने की आदत डालिये, अनुशासन में रहना वे अपने-आप सीख जायेंगे। इस आदत की शुरूआत जितनी छोटी उम्र में हो, उतना ही अच्छा है। देखा गया है कि अवज्ञा का पहला पाठ बच्चे को माता-पिता ही पढ़ाते हैं।

बच्चों को हठी और ढीठ भी माता-पिता स्वयं ही बनाते हैं। वे बच्चों को प्रायः तब तक कोई चीज नहीं लेकर देते जब तक कि वे उस के लिये हठ न करें। माताओं के विषय में तो यह प्रसिद्ध है कि 'बिना रोये माँ दूध भी नहीं देती।' मुहल्ले में आइसक्रीम वाला आया। राजू ने माँ से महा, 'माँ, आइसक्रीम ले दो।' पर माँ ने मना कर दिया। राजू ने जब देखा कि आइसक्रीम वाला लौटा जा रहा है और माँ इनकार करती चली जा रही है, तो वह पैर पटक कर रोने लगा। लाचार होकर माँ ने उसे आइसक्रीम के लिए पैसे दे दिये। यह तरीका ठीक नहीं। माँ को पहले ही सोच लेना चाहिये था कि वह बच्चे को आइसक्रीम देगी या नहीं। एक बार मना करने पर तत्काल 'हाँ' नहीं करनी चाहिये थी—चाहे लाख सिर पटक लेता। बच्चे को जब एक बार विश्वास हो जायेगा कि उसकी माँ एक बार जो कह देती है वही होता है और जिद्द करने पर वह नाराज हो जाती है, तो फिर वह हठ नहीं करेगा।

बच्चे जब बड़े हो जाते हैं, तब माता-पिता को कई बार ऐसा लगने लगता है कि वे उनके कहने से बाहर होते जा रहे हैं। प्रायः लड़कियों के बारे में माँ को ऐसी शिकायत रहा करती है, जबकि

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

स्थिति वास्तव में बिल्कुल चिन्ताजनक नहीं होती। होता केवल यह है कि घर की चहारदीवारी से निकल कर लड़कियां-जब स्कूल में या मुहल्ले में दूसरी लड़कियों के सम्पर्क में आती हैं तो उनमें आत्म-विश्वास भरने लगता है और उनके व्यक्तित्व का स्वतन्त्र विकास होने लगता है। तब वे बात-बात में अपनी माँ की ओर न देखकर कई स्थितियों में स्वतन्त्रत रूप से फैसला करके उस पर अमल करना चाहती हैं। ऐसी अवस्था प्रत्येक बच्चे के विकास में आती है, जिसमें माता-पिता को धैर्य से काम लेना होता है। पर माताएं जल्दी धैर्य खो बैठती हैं और लड़की के समाने ही कहने लगती हैं, 'बाज आई मैं इस लड़की से। अब इसे कभी काम को नहीं कहूँगी। मेरी बात तो यह सुनती तक नहीं।' इस तरह बच्चे को लाइलाज घोषित करके माताएँ आदर खो बैठती हैं और बिना किसी कारण के उनमें अपराध-भावना बढ़ती-बढ़ती उन्हें लापरवाह और ढीठ बना देती है।

कई बार लड़के जब कहना नहीं मानते तो माताएँ उन्हें प्रायः यह धमकी देती हैं....अपने पिता को आने दे। आज तेरी मरम्मत न करायी तो मेरा नाम बदल देना!' ऐसा कह कर माताएं स्वयं तो आदर खो बैठती हैं, लड़के को पिता के विरुद्ध भी उकसा देती हैं। इस तरह की धमकियों से अपने पिता पर से बच्चे का विश्वास उठने लगता है। उसके मन में बार २ यह प्रश्न उठने लगता है कि वे दब्बू हैं जो स्थिति की पूरी तरह जाँच किये बिना माँ के सिखाने भर से पीटने पर उतारू हो जायेंगे।

बच्चों में अनुशासन की भावना भरने के लिए माता-पिता का एकमत होना बहुत जरूरी है। घर में जो कुछ भी नियम लागू किये जायें उन्हें दोनों एक राय होकर बनायें और समान तत्परता से उनका पालन करायें। ऐसा कभी न हो कि एक तो उनके पालन में जरूरत से अधिक सख्ती से काम ले और दूसरा बेहद ढिलाई दिखाये। आपस में मतभेद होने पर माता-पिता को बच्चों के सामने किसी एक

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

का पक्ष लेकर आपस में बहस नहीं करनी चाहिये। माता-पिता के मतभेद को ताड़ने में बच्चों को देर नहीं लगती और इससे उनमें अनुशासन हीनता बढ़ती है।

सच तो यह है कि बच्चों को अनुशासन में रखने की बात सोचने से पहले माता-पिता को स्वयं अनुशासन में रहना होगा। उन्हें स्वयं भी वही करना होगा जो बच्चों को करने के लिए कहें। उन के रहन-सहन और-विचार से यह बात पूरी तरह व्यक्त हो जानी चाहिए कि परिवार के नियम छोटे-बड़े सभी पर समान रूप से लागू होते हैं। भूल हो जाने पर माता-पिता को स्वयं सजा पाने के लिए तैयार रहना होगा। सजा का फैसला यदि बच्चों पर छोड़ा जाय तो और भी अच्छा हो। इससे बच्चों का उनकी न्यायप्रियता पर विश्वास जमेगा।

इस तरह सूझ-बूझ और संयम से माता-पिता को बालकों के के मन में यह बात बैठा देनी होगी कि घर में अनुशासन का प्रयोग तङ्ग करने के लिये नहीं किया जाता। अनुशासन इसलिए जरूरी है वह सफल जीवन की धुरी है। ★

यदि आप माँ बनने वाली है—

आप पहली बार माँ बनने जा रही हैं तो इस समय आपके दिल में एक मीठी पुलकन के साथ२ कई आशङ्काएँ भी उठती होंगी। आप सोचती होंगी कि वह दिन कितना सुहाना होगा जब आपकी गोद में एक नन्हा मुन्ना खिलौना खेलता होगा। घर, आंगन में खुशियों की बहारें झूमती होंगी। आपकी ननदें, जिठानियाँ, सासू, माँ सभी के चेहरों पर हँसी तैरती होगी और वे आँखों ही आखों में आप पर आशीर्वाद और शुभ कामनाओं की वर्षा करते होंगे। कितना सुखमय दिन होगा वह। लेकिन इन मधुर ख्यालों की दुनियाँ में तैरनेके साथ-साथ आपके दिल में एक और भी हलचल रह २ कर होती होगी।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

आप सोचती होंगी कि ये खुशी के नजारे देखने को तब मिलेंगे जब कि आप माँ बन चुकेंगी।

इससे पहले कि आप गर्भावस्था के दिन पूरे करके बच्चे की माँ बनने का सौभाग्य हासिल करें, आपको अपने स्वास्थ्य की भी समुचित देखभाल करनी होगी ताकि होने वाला बच्चा स्वस्थ और सुन्दर हो। कैसे कटेंगे ये भारी पड़ रहे दिन। कितना कष्ट झेलना पड़ेगा। कहीं कोई उलझन या मुसीबत तो नहीं खड़ी हो जायेगी, आदि। आपका यह सोचना ठीक भी है। हर माँ जब पहली बार बच्चे को जन्म देती है तब गर्भावस्था के दिनों में इसी तरह के ख्याल उसके दिमाग में घूमते रहते हैं।

लेकिन माँ बनने में जहाँ तक तकलीफों और उलझनों की बात है, उनसे डरने या घबराने की कोई बात नहीं। माँ बनना और बच्चे को जन्म देना एक प्राकृतिक क्रिया है। यह हर नारी के लिए एक सुखद स्थिति है। हां, यह जरूर है कि गर्भावस्था में हर महिला को थोड़ी सी समझदारी और सूझबूझ से काम लेना चाहिए ताकि कष्ट और उलझनें बिना बुलाए मेहमान की तरह न आ धमकें।

इसके लिए हर एक गर्भवती महिला को नीचे लिखी कुछ बातों पर खास तौर से अमल करना चाहिए—

(१),गर्भावस्था के दौरान अच्छी प्रेरक पुस्तकें तथा महापुरुषों के जीवन चरित्र पढ़ने चाहिए।

(२) मन को प्रसन्न और सेहत को अच्छा रखें।

(३) किसी भी तरह का कष्ट होने पर डाक्टर की सलाह के बिना किसी भी दवा का सेवन न करें।

(४) हर रोज सुबह और शाम स्वच्छ वायु में कुछ देर टहलें।

(५) अपने रहने के कमरे तथा शयन कक्ष में महापुरुषों के चित्र अवश्य लगायें।

(६) सूर्य के प्रकाश से शरीर को विटामिन डी मिलता है।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

इसलिए अगर सर्दियाँ हों तो हर रोज कुछ देर के लिए धूप का सेवन अवश्य करें।

(७) घर के काम-काज से पूरी तरह मुँह न मोड़ें। हल्के-फुल्के काम, जैसे कि सब्जी काटना, भोजन परोसना आदि करती रहें। काम में थकावट महसूस होने पर विश्राम अवश्य करें।

(८) वजन उठाने और भाग दौड़ के काम से अपने को बचाए रखें।

(९) कम से कम रोज ८ घण्टे की नींद अवश्य लें।

(१०) प्रजनन अङ्गों की नियमित सफाई करें।

(११) कपड़े ज्यादा कसावदार न पहनें।

(१२) सुपाच्य, सादा तथा पोषक तत्वों से भरपूर भोजन करें।

(१३) समय २ पर मातृ, शिशु केन्द्र पर जाकर या डाक्टर से अपनी सेहत की जाँच करायें।

(१४) डाक्टर की सलाह के अनुसार प्रसव के ससय के लिए जरूरी चीजों को पहले से व्ययस्था करलें। ★

इन्हें भी अजमाइये—

पसीने का धब्बा—सादे पानी से धोकर, अमोनिया के हल्के घोल से साफ करिये।

पान का धब्बा—पका हुआ अमरूद, प्याज का रस, हरी मिर्च कच्चा दूध, कच्चा आलू पीसकर और चूने या बोरेक्स का घोल रगड़ने से दाग साफ हो जाता है।

तारकोल का धब्बा—क्लोरोफार्म, मिट्टी का तेल या कार्बन टैट्राक्लोराइड को लगाकर दाग छुड़ाइये।

लिपिस्टिक का धब्बा—मैथिलेटेण्ड स्पिरिड या कार्बन टैट्राक्लीराइड लगाइये फिर साबुन से साफ करिये, दाग साफ हो जायेगा।

★

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

स्व वेश-भूषा का अभिमान

बङ्ग भूमि में अनेक स्वनाम धन्य पुरुषों ने जन्म लिया है। उन्हीं में से अग्रगण्य थे पंडित ईश्वरचन्द्र विद्यासागर भी। स्वदेश की संस्कृति और गौरव पर उन्हें अभिमानथा। अपनी प्रकाण्ड प्रतिभा व विद्वत्ता के कारण ब्रिटिश शासक भी इस महान् विद्वान् का समुचित सम्मान करते थे।

एक बार एक सरकारी भोजन में सम्मिलित होने के लिए आप को निमन्त्रण मिला तो आप कुर्ता धोती आदि विशुद्ध भारतीय परिधान धारण कर इस समारोह में भाग लेने के लिए निर्धारित स्थान पर पहुँचे।

जब आप प्रवेश द्वार से भीतर प्रविष्ट होने लगे तो द्वारपाल ने आपको धोती कुर्ता धारण किया देखकर रोक दिया। पण्डित ईश्वर चन्द्र विद्यासागर ने उसे इस भोजसमारोह मेंसम्मिलित होने का निमन्त्रण पत्र भी दिखाया। किन्तु द्वारपाल पर इसका कोई प्रभाव न हुआ और वह अपने दुराग्रह पर अटल रहा। परिणामतः श्री विद्यासागर को वहाँ से लौटना पड़ा।

श्री विद्यासागर ने वापस लौटकर किसी स्थान से अंग्रेजी परिधान-कोट पेंट आदि प्राप्त किए। फिर इस विदेशी परिधान को धारण कर पुनः भोज स्थल पर जा पहुँचे।

जब आप द्वार पर पहुँचे तो उस द्वारपाल ने आपका अभिवादन किया, जिसने कुछ ही समय पूर्व इस समारोह का निमन्त्रणपत्र दिखाने पर भी प्रवेश न करने दिया था।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

स्वभाषा एवं स्ववेशभूषा के इस अभिमानी विद्वान् ने भीतर प्रवेश कर भोजन की मेज पर जाते ही रसगुल्ले, खीर आदि मिष्ठानों व अन्य खाद्य पदार्थों को कोट पैंट में डालना आरम्भ कर दिया।

इस अवसर पर वहाँ उपस्थित लोगों ने जब श्री विद्यासागर के इस अनौखे कृत्य को देखा तो वे अवाक् रह गये। कुछ को ऐसा प्रतीत हुआ कि शायद पण्डित जी मानसिक असन्तुलन से ग्रस्त हो गए हैं। किन्तु कुछ लोगों ने साहस किया आर पूछा कि 'पण्डित जी यह आप क्या कर रहे हैं?'

पण्डित जी ने मुस्कराते हुए उत्तर दिया 'भय्या! यहाँ जिसे भोजन के लिए आमन्त्रित किया गया था, उसे भोजन करा रहा हूँ।'

वह मित्र पुनः बोले 'आपका आशय हम समझ नहीं सके हैं।'

इस पर पंडितजी ने अपनी सारी आपबीती कह सुनाई। जिसे सुनकर सभी सन्न रह गये और पंडित जी के स्व-वेशभूषा प्रेम की छाप भी उन पर पड़ गई। ★

हम भारत के बालवीर हैं —सुशील चोटवानी

सच्चाई है नियम हमारा
हम भारत के बालवीर हैं
अप प्रण को सदा पालते,
ऐसे हम सब कर्मवीर हैं।

पूर्वजों का कर सम्मान
हमें बनाना देश महान्
नहीं किसी से बैर रखेंगे
नहीं किसी का वार सहेंगे।

रखेंगे स्वदेश का मान
उसके हित सब कुछ कुर्वान
आपस में रह एक बढ़ेंगे
सदा देश की लाज रखेंगे।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

लाख टके की औषध लौंग

—श्री नरेन्द्र भट्ट

नेपाली व भारतवासी लौंग के गुण और उपयोग से प्राचीन काल से परिचित रहे हैं। अमर कोष से लौंग के लवङ्ग,देवकुसुम, श्रीसंज्ञ आदि नाम प्राप्त होते हैं।

लौंग के वृक्ष बड़े लुभावने व सुगन्धित होते हैं। प्राकृतिक रूप से लौंग मौलुक्का में पैदा होती है, इसकी खेती श्रीलङ्का, मारीशस, दक्षिण भारत, जंजीबार, मेडागास्कर, तेनांग आदि स्थानों पर की जाती है।

नन्ही लौंग गुणों से भरपूर

लौंग का रासायनिक विश्लेषण किये जाने पर उसमें १५ से २० प्रति० तक एक उड़नशील तेल और एक करियोफाइलीन नामक गन्धहीन, स्वादहीन, रङ्गहीन, रवेदार पदार्थ पाया जाता है। इनमें जो उड़नशील तेल पाया है, इसमें ५२ प्रति० तक युजेनाल नामक महत्वपूर्ण पदार्थ तथा फर्यूराल मैथिलसलिसिलेटादि पाये जाते हैं। इसमें गलौटानिक एसिड १३ प्रति० तक होता है।

मेटेरिया मेडिका ग्रन्थमें लौंग को लालारस, भूख तथा आमाशय रस को बढ़ाने वाली बतलायाहै। आयुर्वेद के ग्रन्थ 'भाव प्रकाश निघण्टु' में लौंग को कफ, पित्त, रक्त विकार, तृषा आदि रोगों को दूर करने वाला बतलाया गयाहै। लौंग कटु, तिक्त रसयुक्त, लघु,नेत्र के लिए हितकर, शीतवीर्य, अग्नि को दीप्त करने वाली, पाचक और रुचिकर होती है।

अनुपम घरेलू औषध—

अगर आपको हिचकी बहुत चल रही हो तो एक या दो लौंग खाकर पानी पी लीजिए, हिचकियाँ फौरन बन्द होजावेंगी। सिरदर्द हो तो लौंग को गरमपानी में घिसकर उसके लेप को माथे पर लगाने से जल्दी आराम होता है। आपको अजीर्ण हो रहा हो

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

अथवा पेट में दर्द हो रहा हो तो लौंग का चूर्ण गर्म पानी के साथ लें। राहत महसूस होगी।

लौंग का सेवन करने से खून में श्वेत कणों की वृद्धि होती है, जिससे रोगप्रतिरोध की शक्ति बढ़ती है।

जी मिचलाने पर या कै होने पर लौंग खाने से शांति प्रतीत होती है। गले में सूजन हो या कुक्कुर खांसी हो, लौंग को आग पर भूनकर फिर उसे मुंह में रखकर चूसने शीघ्र लाभ होता है। लौंग से लौंग का तेल भी गुणों में कम नहीं होता है। अगर आपकी आँतों में दर्द हो तो लौंग का तेल डालकर उसे खायें तुरन्त आराम होगा। दांतों में दर्द होने पर लोंग के तेल से भींगा हुआ फाहा दर्द करने वाले दांतों के गढ़े में रखने से पीड़ा दूर होती है। ★

हृदय-रोग से बचाव

दुनिया में हृदय-रोग से मरने वालों की संख्या सर्वाधिक है। भारत में भी इस रोग की भयंकरता दिन-पर-दिन बढ़ती जा रही है। आज चिकित्सा-वैज्ञानिकों का ध्यान इस तथ्य की ओर आकर्षित हुआ है कि हम जो कुछ खाते हैं, विशेष रूप से वसा अथवा चिकनाई, वह धमनियों को कड़ा बना सकता है, जिसे धमनी-ज़रठता कहते हैं। हृदय-रोग के कई कारण है, जैसे आनुवंशिकता, उच्च रक्तचाप, उम्र, सेक्स, (मीनोपास के पहले औरतों को दिल का दौरा पुरुषों से कम होता है), अत्यधिक धूम्रपान, शारीरिक श्रम अथवा कसरत न करना, मुटापा और खुराक।

वैज्ञानिकों में इस बात पर मतभेद है कि धमनियों की कठोरता के लिए क्या भोजन ही मुख्य रूप से जिम्मेवार है? कुछ चिकित्सकों का कहना है कि खाने की आदतों में सुधार करने से धमनियों की कठोरता और परिणामतः हृदय के दौरों से बचा जा सकता है। जब कि कई अन्य इसके प्रति अपनी असहमति प्रकट करते हैं।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

खैर, यह बात समझ लेनी चाहिये कि धमनी-जरठता उस समय होती है जब चिकनाई वाले पदार्थ परिमण्डलीय धमनियों की भीतरी दीवारों में जमा हो जाते हैं। जमा हुए ये पदार्थ धीरे २ कठोर होकर सख्त तन्तुमय उभार के रूप में परिवर्तित हो जाते हैं, जिसे 'प्लेक्स' कहते हैं।

इसका असर यह होता है कि इससे धमनियों में रक्त का मार्ग संकुचित हो जाता है। यदि चिकनाई-पदार्थ काफी मात्रा में जमा हुआ है, तो धमनियों का मार्ग इतना अवरुद्ध हो जाता है कि हृदय में खून ही न पहुँचे। ऐसी हालत से प्राणघातक हृदय का दौरा हो सकता है। अथवा अनुचित मार्ग में रक्त का धक्का बन सकता है, जिससे दिल का दौरा हो सकता है।

धमनी की दीवारों में जिस पदार्थ का जमाव होता है, उसमें कालेस्टरोल भी होता है, जो चिकनाई पदार्थ है, जिसे शरीर के तन्तु निर्मित करते हैं। यद्यपि शरीर अन्य प्रकार की चरबी को जलाकर नष्ट कर देता है पर कालेस्टरोल आगजनी से नष्ट नहीं होता। कुछ परिस्थितियों के अन्तर्गत वह धमनी के कठोर उभार का रूप धारण कर लेता है।

अनुसंधानों से इस बात का पता लगता है कि भोजन में जिस किस्म की चर्बी की प्रधानता होती है, उसमें परिवर्तन करके रक्त की कालेस्टोरोल-सतह को बढ़ाया या घटाया जा सकता है।

आधारभूत रूप से खाद्य वसा और तेल में तीन किस्म के वसा अम्ल होते हैं—संतृप्त, एक-असंतृप्त और बहु-असंतृप्त। अनुसंधानों से पता लगा है कि जिस वसा में संतृप्त वसा-अम्ल की प्रचुरता होती है, उससे कालेस्टरोल की सतह बढ़ती है और जिसमें बहु-संतृप्त अम्ल होता है, उससे कालेस्टरोल में घटोत्तरी होती है। सामान्य रूप से, संतृप्त वसा-अम्ल की प्रचुरता वाली वसा पशुओं से प्राप्त होती है जैसे दुग्ध-पदार्थ, द्रव रूप में वनस्पति तेल में बहु-असंतृप्त अम्ल

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

काफी होता है, जैसे मैगेरीन, आदि। गिरी के तेल, जैतून के तेल आदि में बहुत कम बहु-असंतृप्त अम्ल होते हैं।

अब बात को इस तरह समझना चाहिये। जिस व्यक्ति में रक्त कालेस्टरोल की सतह बढ़ी हुई है, उसको हृदय का दौरा हो सकता है और यदि उसी व्यक्ति में कालेस्टरोल कम हो तो दिल के दौरे का खतरा कम हो सकता है। यद्यपि यह सिद्ध नहीं किया जा सका है कि रक्त कालेस्टरोल कम करने से दिल का दौरा होगा ही नहीं, फिर भी सम्भावना ऐसी ही होती है। अतः सिफारिश यह की जाती है कि योग्य चिकित्सक के निरीक्षण में वसा के इस्तेमाल को कम अथवा नियन्त्रित किया जाय और संतृप्त वसा अम्ल वाले पदार्थ के स्थान पर बहुअसंतृप्त अम्ल वाले पदार्थ के प्रयोग पर जोर दिया जाय। इससे धमनी-जरठता से बचा जा सकेगा, हृदय के दौरे तथा पक्षाघात का खतरा कम होगा।

कुछ चिकित्सक पूर्वोक्त सुझावों को नहीं मानते। लेकिन यह तो मतभेद की बात हुई। फिर निम्नलिखित बातों पर पूर्ण मतैक्य है।

१—मोटे लोगों को अपना वजन कम करना चाहिये। जितना कैलोरी भोजन हम करते हैं, उसमें कमी करने से वसा की मात्रा भी कम होती है।

२—भोजन की आदतों में भारी बदलाव किसी डाक्टर की सलाह से ही करना चाहिए।

३—हृदय-रोग की सम्भावना वाले व्यक्तियों अथवा हृदय के दौरे के शिकार लोगों को वसा-युक्त पदार्थ एकदम बन्द कर देना चाहिए और बहु असंतृप्त वसा अम्ल वाले पदार्थों का सेवन बढ़ा देना चाहिए।

अपना वार्षिक शुल्क शीघ्र भेजें।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

महर्षि दयानन्द और यौन शिक्षा

– ब्रह्मदत्त

१९ वीं शताब्दी में जिन युग निर्माताओं ने जन्म लिया उनमें महर्षि दयानन्द का स्थान सर्वोपरि है। इसका कारण है तत्कालीन विद्वानों ने जीवन के किसी एक पक्ष पर ही विचार किया, परन्तु महर्षि दयानन्द की क्रान्तदर्शी बुद्धि से जीवन का कोई भी महत्वपूर्ण अङ्ग छिपा न रह सका। महर्षि ने जीवन के हर महत्वपूर्ण विषय पर अपने अमूल्य विचार प्रकट किए हैं।

आज भारत के विद्यालयों में यौन शिक्षा दिये जाने की माँग जोरों पर है। यदि यौन शिक्षा अपने उचित रूप में बालकों को दी जाय तो हो सकता है आज की युवा पीढ़ी जो अनेकों यौन रोगों से पीड़ित है अपने भविष्य को सुरक्षित रखने का कोई उपाय ढूंढ़ सके।

महर्षि दयानन्द ने न जाने कितने अनछुए विषयों पर अपनी लेखनी उठायी है यौन शिक्षा के बारे में भी हम बहुत ही महत्वपूर्ण संकेत महर्षि के ग्रन्थों में पाते है।

महर्षि दयानन्द अपने अमर ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश में लिखते हैं कि 'माता पिता को चाहिए कि अपनी सन्तान को वीर्य की रक्षा से आनन्द और नाश से दुःख प्राप्ति जना दे, और उन्हें इस प्रकार उपदेश करे—

'देखो ! जिसके शरीर में सुरक्षित वीर्य रहता है, तब उसको आरोग्य, बुद्धि, बल (और) पराक्रम बढ़ के बहुत सुख की प्राप्ति होती है। इसके रक्षण में यही रीति है कि विषयों का, विषयी लोगों का संग, विषयों का ध्यान, स्त्री का दर्शन, एकान्त सेवन, संभाषण, और स्पर्श आदि कर्म से ब्रह्मचारी लोग पृथक् रहकर उत्तम शिक्षा और पूर्ण विद्या को प्राप्त होवें।'

'जिसके शरीर में वीर्य नहीं होता, वह नपुंसक, महाकुलक्षणी (होता है) और जिसको प्रमेह रोग होता है, वह दुबल, निस्तेज निर्बुद्धि (और) उत्साह, साहस, धैर्य, पराक्रमादि गुणों से रहित होकर नष्ट हो जाता है।'

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

तक हम लोग गृहकर्मों को करने वाले जीते हैं, तभी तक तुमको विद्या ग्रहण और शरीर का बल बढ़ाना चाहिएं। इसी प्रकार की अन्य-अन्य शिक्षा भी माता और पिता करें।'

उपरोक्त विचारों का गम्भीरता से अध्ययन करने पर ज्ञात होता है कि महर्षि यौन शिक्षा के समर्थक थे। मगर वे यौन शिक्षा दिये जाने का स्थान विद्यालयों को नहीं बनाना चाहते थे, वे चाहते थे कि इस प्रकार की शिक्षा केवल माता-पिता द्वारा दी जाय।

आज के विद्यालयों में सहशिक्षा की व्यवस्था है, अतः इन विद्यालयों में यौन शिक्षा देना आग में घी डालने के समान होगा। इससे चरित्र सुधरने के स्थान पर बिगड़ने की आशंका अधिक है। इस विषय पर महर्षि का मत है कि सहशिक्षा नहीं होनी चाहिए। वे तो यहाँ तक कहते हैं कि 'कन्याओं की पाठशाला में सब स्त्री और पुरुषों की पाठशाला में पुरुष रहें।' महर्षि का मत कितना उचित है इसकी परीक्षा हम आये दिन विश्वविद्यालयों में होने वाली घटनाओं से कर सकते हैं।

अतः यदि देश के युवकों का चरित्र सुधारना है तो हमें महर्षि दयानन्द द्वारा प्रतिपादित मार्ग पर चलना होगा। ✻

भारत के आर्यों की उत्पत्ति—सूर्यदेवजी, अजमेर

मानव इतिहास में दो प्रश्न सदा से समस्या पूर्ण एवं महत्वपूर्ण रहे हैं, एक मानव की प्रथम बार उत्पत्ति कहाँ पर हुई? और दूसरा मानव की उत्पत्ति कब हुई? इन दोनों प्रश्नों पर बड़े-बड़े मनीषी विद्वानों, प्रागैतिहासिक काल के अनेक अनुसन्धान-कर्त्ताओं ने अतीव परिश्रम के साथ खोजबीन की है, परन्तु वे किसी एक परिणाम पर नहीं पहुँचे हैं। प्रारम्भ से उनमें मतभेद रहा है और शायद आगे भी रहेगा। अभी मैं इन प्रश्नों की ऊहापोह नहीं कर रहा हूँ। अभी तो मेरे सामने अन्य दो प्रश्न उभर कर आरहे हैं—

१—भारत में जो आर्य लोग हैं—वे कहीं बाहर से आकर यहाँ

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

आबाद हुए या यहीं उनकी आदि उत्पत्ति हुई ?

२—क्या दक्षिण भारत के निवासी द्रविड़ लोग उत्तर के आर्यों से भिन्न हैं या वे भी आर्य ही हैं ?

इनमें से प्रथम प्रश्न के उत्तर में प्रो० मैक्समूलर ने लिखा कि आर्य लोग मध्य एशिया (अथवा काकेशिया) से चलकर भारत में उत्तर पश्चिम से प्रविष्ट हुए। प्रो० विंटरनिट्ज ने तथा अन्य कई विद्वानों ने ईरान की ओर से अथवा भूमध्य सागर से भारत में उनका आना माना है। लोकमान्य तिलक ने आर्यों की उत्पत्ति एव उनका भारत प्रवेश, उत्तरो ध्रुव प्रदेश से माना है।

परन्तु इन सबके विपरीत स्वामी दयानन्द सरस्वती जी ने आर्यों की आदि उत्पत्ति तिब्बत के पठार पर अथवा हिमालय पर्वत पर तथा भारत में ही मानी है, और इस प्रकार ब्रिटिश राज्य के उस षड्यन्त्र का भंडाफोड़ किया जो आर्यों को बाहर से आया हुआ बतलाते हैं और दक्षिण भारत की द्रविड़ जाति को आर्यों से पृथक् भारत की आदि निवासिनी जाति मानते हैं। स्वामी जी के इस मन्तव्य के समर्थन में अनेक पुरा-तत्व-विशारदों के मत उद्धृत किये जा सकते हैं जैसे—

(१) आर्यों को ईरानी शाखा के विशेषज्ञ श्री खुरशेद जी रुस्तम जी ने अपनी पुस्तक 'मानव का मूल जन्म स्थान' में हिमालय की शाखा हिन्दूकुश को, जो ३७ से ४० उत्तरी अक्षांश तक फैला हुआ है, आर्यों का आदिम स्थान सिद्ध किया है।

(२) पूना के प्रसिद्ध विद्वान् नाना पावगी ने अपनी पुस्तक 'आर्यावर्तातीत आर्याची जन्मभूमिः' में लिखा है—'हिमालय ही हमारा और हमारे देवताओं का उत्पत्ति स्थान है।' (पृष्ठ २७२)

(३) श्री अविनाशचन्द्र दास ने ऋग्वेदिक इण्डिया' पुस्तक के ३७६ पृष्ठ पर लिखा है—'वैदिक ऋषियों ने उत्तर के नक्षत्रों को हिमालय (जहाँ उनका जन्म स्थान था) के ऊँचे पर्वतों पर से ही देखा था।'

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

(४) बङ्गाल के प्रसिद्ध विद्वान् श्री उमेशचन्द्रदत्त ने अपनी पुस्तक 'मानवेतर आदि जन्म भूमि' के पृष्ठ १२४ पर लिखा है, 'भारत में बसे हुये हमें (आर्यों को लाखों वर्षों से कम समय नहीं हुआ..... हिमालय ही हमारा मूल स्थान है..... ।)

(५) महाभारत में भी लिखा है--

हिमालयाभिधानोऽयं ख्यातो लोकेषु पावनः । तत्र सर्वाः समुत्पन्नाः.....॥

(६) वायु पुराण में भी लिखा है कि मानव की आदि सृष्टि हिमालय में मानसरोवर के पास हुई ।

ख--जल प्लावन के समय नूह ने अपनी नाव हिमालय पर ही बाँधी थी, जैसा कि कहा गया है--

बन्दे कलीम जिसके, पर्वत जहाँ के सीना ।
नूहे नवी का आकर, ठहरा जहाँ सफीना ॥

इसी जलप्लावन दृश्य का वर्णन महाभारत में भी है—

'हिमवतः शृंगे नावं, बध्नीत मनुनाचिरम् ।'

आज ऋषि दयानन्द के मन्तव्य को सिद्ध करने के लिये और बीसियों प्रमाण दिये जा सकते हैं । इन सब प्रमाणों से सिद्ध होता है कि आदिम आर्यों (मानवों) की आदि सृष्टि हिमालय अथवा भारत में ही हुई थी । धन्य है ऋषि दयानन्द को जिन्होंने संसार के मानव-समाज के इतिहास में हमारा (भारतीय आर्यों का) मस्तक ऊँचा किया है ।

यह हिमालय ही हमारा, मानवों का मान है ।
आर्य आदिम जाति का, सर्वोच्च जन्म-स्थान है ॥

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

संक्रान्ति यज्ञ की पावन ज्वालायें !

—२१ से २४ जनवरी में श्री श्रीचन्द जी सिंघल राजगांगपुर (उत्कल प्रदेश) के परिवार में आंशिक ऋग्वेद महायज्ञ एवं वेद कथा का आयोजन श्री महात्मा प्रेमभिक्षुजी के आचार्यत्व में सम्पन्न हुआ।

—१ से ३ फरवरी तक आर्यसमाज फरीदाबाद में श्री महात्मा जी द्वारा वेदकथा व पारिवारिक सत्सङ्गों का कार्यक्रम निष्पन्न हुआ।

—दि० ८ से १० फरवरी तक आ० स० गङ्गापुरसिटी में अभूतपूर्व यज्ञ आयोजन हुआ। महिलाओं का उत्साह दर्शनीय था।

—दि० १६ से १८ फरवरी तक आ० स० कासिमपुर (अलीगढ़) तथा २५-२६ फरवरी में मानागढ़ी (मथुरा) के शुभ्र कार्यक्रम भी बड़े श्रद्धोपेत वातावरण में सम्पन्न हुए।

—दि० ११ से १४ मार्च में उत्सव से पूर्व आ० स० सेवा सदन बल्लबगढ़ में वेद कथा एवं पारिवारिक सत्सङ्गों का प्रभावी कार्यक्रम चला। श्रीसत्यदेव गुप्त ने बालक का जन्म दिवस मनाया।

—दि० २१ से २४ मार्च में अलनियाँ (कोटा) में वैदिक परिवार साधना शिविर का सफल कार्यक्रम श्रद्धेय प्रेमभिक्षु जी के आचार्यत्व में सम्पन्न हुआ। सभी कार्यक्रमों में अनेकों श्रद्धालु नर-नारियों ने जीवन निर्माण विषयक व्रत लिये। (विस्तृत विवरण पुनः पढ़ें।)

वैदिक संस्कार : हार्दिक शुभाशिष

दि० १८ फरवरी को श्री श्रीचन्द जी (राजगांगपुर) के सुपुत्र गोपाल प्रसाद जी, श्री प्रह्लादकुमार जी आर्य हिण्डौन की सुपुत्री प्रतिभा आर्या, श्री ओमप्रकाश जी आर्य हिण्डौन की सुपुत्री आ०सुधा तथा दि० ४ मार्च को श्री पं० हेतराम जी आर्य के सुपुत्र अजय आर्य के विवाह संस्कार विभिन्न आचार्यों द्वारा सम्पन्न हुए। श्री प्रह्लाद कुमार जी आर्य ने संस्कार के अवसर पर ११११)रु० विभिन्न संस्थाओं को तथा वर पक्ष ने ५००) रु० आ० स० हिण्डौन को दान में दिये। ६ मार्च को श्री नन्दकिशोर जी गङ्गापुर सिटी के नवजात शिशु का नामकरण संस्कार श्रद्धेय प्रेमभिक्षु जी के आचार्यत्व में हुआ।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

सूचना सार—

आर्यसमाज कोटा के प्रधान श्री [illegible] जी के पौरोहित्य में दिनांक २७-१-८० को श्री [illegible] को शुद्ध करके वैदिक धर्म में दीक्षित किया गया। [illegible]

आदर्श होली—आर्य नव युवक संघ हरफरी (बदायूं) द्वारा तपस्वी प्रवर श्री स्वामी ब्रह्मानन्द जी वेदभिक्षु के निर्देशन में होली पर्व अत्यन्त आदर्श रूप में पाँचवें वार्षिक उत्सव कार्यक्रम के साथ १ से ३ मार्च तक मनाया गया। पञ्चकुण्डी यज्ञ के ब्रह्मा श्री डा० ज्ञानप्रकाश जी कच्चाहारी थे। कई भजनोपदेशकों ने भाग लिया। आर्यसमाज ऊंचागाँव (मथुरा) में भी होली पर्व १ से ३ मार्च तक उत्सव के साथ आदर्श रूप में मनाया गया। कई विद्वान् पधारे।

निर्वाचित—आर्यसमाज इन्दौर (मल्हारगंज) के प्रधान श्री सोमराज जी तथा मन्त्री श्री हरिचरण लाल जी वर्मा चुने गये हैं।

शोकवृत्त—आ० स० बड़ा बाजार कलकत्ता के भू० पू० प्रधान श्री मोहनलाल जी अग्रवाल कीमाताजी का विगत १० जनवरी को शरीरान्त होगया। प्रभु दिवङ्गत आत्मा को शान्ति दें।

सत्यार्थ प्रकाश मुफ्त—

दिवंगत कु० सविता शर्मा की स्मृति में सत्यार्थ प्रकाश वर्ष में निःशुल्क वितरण का आयोजन किया है। इच्छुक सज्जन रजि० डाक व्यय भेजकर मंगाकर स्वाध्याय कर इस [illegible] से शान्ति मार्ग का [illegible] करें। —माया शर्मा

[illegible] (बुलन्दशहर)

ईश्वरीप्रसाद 'प्रेम' स्वामी एवं मुद्रक वैदिक प्रेस, मथुरा द्वारा सत्य प्रकाशन मथुरा के लिये प्रकाशित।

१०२२ श्री प्रह्लादकुमार जी आर्य
आर्यसमाज हिण्डौन सिटी।
जि० सवाई माधोपुर

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi